Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 18 अंक 10 30 अक्तुबर, 2018 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

हरियाणा में महिला विरूद्ध अपराध एक कलंक

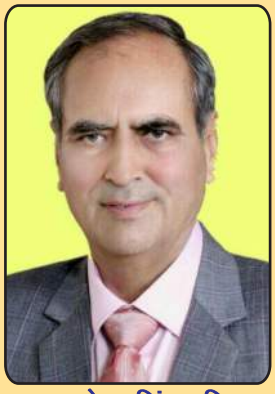

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

10 जनवरी, 2018 के आंकड़े बताते हैं कि हरियाणा की कुल 2.54 करोड़ की आबादी में पुरुषों की संख्या 1 करोड 34 लाख के मुकाबले महिलाओं की संख्या 1 करोड 11 लाख है। लिंगानुपात के शर्मनाक आंकडों के अनुसार 1000 पुरूषों के पीछे 879 महिलाएं हैं तथा बच्चों का लिंगानुपात 1000 के पीछे 834 है। आज प्रदेश में महिलाओं की स्थिति और उनके खिलाफ बढ़ रहे अपराधों पर चिंतन किए जाने की जरूरत है क्योंकि हरियाणा राज्य राष्ट्र में महिला विरूद्ध अपराधों में तीसरे नंबर पर है तथा बलात्कार जैसे घिनौने अपराधों की तो यह प्रदेश राजधानी ही बन गया है।

हाल ही में रेवाड़ी गैंगरेप मामले के बाद सरकार ने महिला विरुध अपराधों पर जीरो टॉलरेंस नीति की बात फिर से दोहराई है। असलियत ये है कि हरियाणा में महिलाएं अब ना तो घरों में सुरक्षित है और ना बाहर। हरियाणा विधानसभा के मानसून सत्र में भी राजनीतिक दलों ने महिलाओं की सुरक्षा पर अपनी चिंता जाहिर की थी। विधानसभा में प्रदेश सरकार ने खुद माना कि राज्य में महिला थाने खुलने के बावजूद महिलाओं के प्रति अपराध में खास कमी नहीं आई है, लेकिन कहा कि अब महिलाओं की हर शिकायत को थाने में दर्ज किया जाने लगा है। इससे अपराध का आंकड़ा बढ़ा है। हरियाणा में महिलाओं के अपहरण के मामले भी लगातार बढ़ रहे हैं। पहले साल 1664, दूसरे साल 2330, तीसरे साल 3055 और चौथे साल सितंबर 2017 तक 3494 महिलाओं अथवा लड़कियों के अपहरण हुए हैं। प्रदेश में महिलाओं के प्रति दुष्कर्म और छेड़छाड़ के मामलों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। सितंबर 2014 से सितंबर 2017 तक पहले साल 961, दूसरे साल 1026, तीसरे साल 1193 और चौथे साल 1413 दुष्कर्म के केस दर्ज किए गए हैं। इसी तरह पहले साल छेड़छाड़ के 1853, दूसरे साल 1774, तीसरे साल 1991 और चौथे साल 2320 मामले पुलिस थानों में दर्ज हुए हैं। हरियाणा में महिलाएं आज भी दहेज उत्पीडन् का शिकार हैं। सितंबर 2014 से सितंबर 2017 के बीच चार सालों में दहेज उत्पीड़न की घटनाओं में बढ़ोतरी हुई है। पहले साल 3408, दूसरे साल 3341, तीसरे साल 3493 और चौथे साल सितंबर माह तक 2896 मुकदमे दर्ज किए जा चुके हैं। दहेज नहीं देने के कारण इन चार सालों में महिलाओं की मौत के मामलों में भी कमी नहीं आई है। पहले साल 260, दूसरे साल 253, तीसरे साल 254 और चौथे साल सितंबर 2017 तक 202 महिलाएं दहेज हत्या का शिकार हुई हैं।

हरियाणा में महिलाओं को सुरक्षित माहौल प्रदान करना गत 14 वर्षों से राज्य सरकार के लिए बरसों से चुनौती रहा है। पिछली हुड्डा सरकार में महिलाओं के प्रति हुए दुष्कर्म के करीब एक दर्जन मामले सुर्खियों में रहे, जबकि यही स्थिति मौजूदा मनोहर सरकार में भी है। महिलाओं के खिलाफ हरियाणा की भयावह स्थिति यह है कि राज्य अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो हरियाणा के हालिया आंकड़े बेहद चिंताजनक हैं. इन आंकड़ों के मुताबिक साल

शेष पेज 2 पर

शेष पेज–1

2017 में हरियाणा में महिलाओं के खिलाफ अपराध में करीब 40 फीसदी की वृद्धि नजर आ रही है। वहीं दूसरी तरफ राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने हाल ही में 2016 के देशव्यापी आंकड़े जारी किए थे । इसके मुताबिक 2016 में हरियाणा में महिलाओं के खिलाफ कुल 9,839 यानि प्रतिदिन करीब 27 अपराध हुए थे।

असलियत यह है कि जब तक सामाजिक ढांचे और सोच में बदलाव के बिना महिलाओं के विरुध अपराध में कमी लाना संभव नहीं है। महिलाओं की हालत बद से बत्तर हो रही है। उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं है। पहले उन्हें घर की सामग्री समझा जाता था, और अब उन्हें अपने मनोरंजन के लिए खेलकर फैंक देने वाला खिलौना। लेकिन अब बहुत हो चुका है। अब बडे बदलाव की जरूरत है। इसके लिए सिर्फ सरकार को ही नहीं बल्कि बुद्धिजीवियों के साथ-साथ समाज के वरिष्ठ नागरिकों को भी आगे आना होगा। सबसे पहले उन्हें अपनी सुरक्षा खुद करनी होगी। सिर्फ कानूनों से महिलाओं पर बढ़ रहे अपराधों पर लगाम नहीं लगाया जा सकता है बल्कि लोगों की सोच और मानसिक चिंता धारा में बदलाव अति आवश्यक है। लोगों के नजरिए में बदलाव जरूरी है। महिलाओं को पर्याप्त शिक्षा देना और उनके स्वास्थ्य का विकास करना होगा।

कड़वी सच्चाई ये भी है कि हमारे समाज में बहुत सारे रेप के मामले सामाजिक व पारिवारिक दबाव, भेदभाव, बदनामी का डर इत्यादि के कारण दर्ज ही नहीं हो पाते हैं। कितने ऐसे अपराध हैं जिनके लिए हमारे कानून में सजा का कोई प्रावधान तक नहीं है। कभी उन्हें मानसिक रुप से तनाव मिलता है तो कभी पारिवारिक दवाब, कभी उन्हें सबके सामने अपमानित होना पड़ता है तो कभी बेवजह सजा मिलती है। जब कोई गुनाह होता है सियासी खेल शुरू हो जाता है। पल भर के लिए राजनीति गरम होती है बयानबाजी होती है और फिर सब ज्यों का त्यों हो जाता है। इन अपराधों के खिलाफ न तो तत्परता से कोई कदम उठाया जाता हैं और ना ही कड़ी कार्रवाई की जाती है। इसी का नतीजा है कि महिलाओं के खिलाफ अपराध के जो मामले अदालत तक पहुंचते भी हैं, उनमें से 4 में से 1 में ही अपराधी को सजा मिल पाती है। प्रशासन की यही विफलता, महिलाओं व युवतियों के बीच असुरक्षा फैला रही है। इधर रूढ़ीवादी ताकतों ने इन हालात का फायदा उठाकर, महिलाओं के अधिकारों तथा स्वतंत्रताओं पर हमले तेज कर दिया है। कोई कहता है कि कि इन सब के लिए लड़कियां ही दोषी हैं। उन्हें संभलकर रहना चाहिए। समाज के धराशायी लोग उनपर कई तरह की पाबंदी लगा डालते हैं। कहीं मोबाईल फोन का इस्तेमाल रोक दिया जाता है तो कहीं जीन्स पहनने पर रोक, तो कोई कह रहा है कि महिलाओं को अकेले घर से बाहर न निकलने दिया जाएं,तो कुछ ने रात को बाहर जाने से मना करते हैं। जब तक लोगों की सोच में बदलाव नहीं आएगा तब तक कुछ नहीं हो सकता है। महिलाओं को भी जीने का हक है। लड़कों के जैसे उन्हें भी स्वतंत्र होकर खुले आम सड़कों पर घुमने का हक है। महिलाओं पर बढ़े रहे विभिन्न तरह के हमलों को रोकने के लिए सही और वैज्ञानिक सोच के साथ सही रास्ता अपनाते हुए समाज को इसके लिए जागरूक करना आवश्यक है।

दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालिवाल की बात कुछ हद तक सही है कि महिलाओं पर होते अत्याचार की वजह का सबसे बड़ा कारण है मानसिकता। अपराध का जन्म सोच और मानसिकता के साथ ही होता है। महिलाओं को लेकर समाज को सोच बदलने की जरूरत है। ।आज सभी महिलाओं की उसी तरह तरह इज्जत करनी होगी, जैसे हम अपने परिवार की महिलाओं की इज्जत करते हैं। अपराधों के पीछे दूसरा सबसे बड़ा कारण है लोगों में कानून का डर न होना। इसलिए कानून का डर लोगों के दिलों में बैठना जरूरी है। अब सवाल ये उठता है कि हरियाणा की पृष्ठभूमि में बदलाव की शुरुआत कहां से हो तो इसका सवाल है घर से, अपने गांव से, जिले से इसकी शुरुआत हो। गांवों में बने यूथ क्लब इसमें अहम भूमिका निभा सकते हैं। महिलाओं को साथ जोडकर ये बताना होगा कि महिलाएं सिर्फ संतान की उत्पति का जरिया नहीं है, वो समाज का अहम हिस्सा और धुरी हैं उनके बिना काम चल ही नहीं सकता है। हरियाणा की जो बेटियां खेल व दूसरे क्षेत्रों में आगे आई हैं, सरकार को उन्हें अपने साथ जोडकर एक बडे स्तर पर जागरूकता अभियान चलाना होगा। पुलिस को ज्यादा संवेदी होने की जरूरत है वहीं महिलाओं को ज्याद मुखर होने की जरूरत है।

पुलिस विभाग में महिला सशक्तिकरण को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। विभाग में महिला पुलिस की नफरी मात्र 5 से 6 प्रतिशत है और इसमें भी महिला जांच अधिकारियों तथा राजपत्रित अधिकारियों की संख्या

मात्र 1 से 2 प्रतिशत है। महिला पुलिस प्रशिक्षण भी संतोषजनक नहीं है। अतः हरियाणा पुलिस विभाग में महिला पुलिस की संख्या 33 प्रतिशत तक बढ़ाई जानी चाहिए। इसी तरह प्रशासनिक अपराधिक न्यायिक प्रणाली में भी महिलाओं की संख्या 33 प्रतिशत बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके साथ-साथ ग्रामीण स्तर से लेकर तमाम शहरों और शिक्षा एवं स्थानीय संस्थाओं जैसे कि ग्राम पंचायत व नगर पालिका के साथ तालमेल करके प्रादेशिक सरकार द्वारा स्वंय सुरक्षा प्रशिक्षण शिविर चलाए जाने चाहिए। वर्तमान में चल रहे 'मी-ठू अायिान' के उपर भी लगातार निगरानी रखते हुए आवश्यक कार्यवाही करने की आवश्यकता है क्योंकि इस अभियान को आयोजक के संपादकीय लेख में कहा गया है कि यह केवल 'बुद्धिजीवी क्षेत्र' तक ही सीमित है। आरंभ में ये केरला की एक नन को एक बिशप द्वारा छेड़छाड़ से शुरू हुआ था और आयोजकों द्वारा केवल अभिनेता, अभिनेत्री और कुछ सीमा तक औद्योगिक क्षेत्र तक ही इस अभियान को शुरू किया गया है लेकिन सरकारी विभाग, सार्वजनिक एवं दूसरी आम कामकाजी महिलाएं इस अभियान से अभी भी अछूति हैं। अतः केंद्र एवं राज्य सरकारों को इन क्षेत्रों में महिला उत्पीड़न एवं अपराध रोकने हेतू कठोर कदम उठाने की आवश्यकता है। अपनी बात को कहने का साहस जब तक उसमें विकसित नहीं होगा तब तक महिलाओं के खिलाफ अपराध में कमी आना बेहद मुश्किल है।

डा0 एम0एस0मलिक आईपीएस (सेवा निवृत)
भूतपूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

चौधरी छोटू राम ने सर्व समाज के हित में काम किया : मलिक

कटड़ा में जाट सभा चंडीगढ़ व रहबर–ए–आजम दीनबंधु चौधरी छोटू राम सोसायटी जम्मू के संयूक्त तत्वावधान में चौधरी छोटू राम यात्री निवास के लिए किया भूमि पूजय

जम्मू /कटड़ा, 24 अक्तूबर (अमित) : हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं जाट सभा चंडीगढ़ के अध्यक्ष डा. महेंद्र सिहं मलिक ने कहा कि दीनबंधु चौधरी छोटू राम जात–पात में विशवास नही करते थे, बल्कि उन्होने समाज के सभी वर्गों के हित में काम किया।

विशेषकर किसान, मजदूर एवं कामगार वर्गो के लिए तो वह किसी मसीहा से कम नहीं थे। डा. मलिक ने यह बात आज कटड़ा क्षेत्र के गांव नौमाई (नोमैन) में जाट सभा चंडीगढ़ व रहबर–ए आजम दीनवंधु चौधरी छोटू राम सोसायटी जम्मू के संयुक्त तत्वावधान में निर्माणाधीन रहबर –ए–आजम दीनबंधु चौधरी छोटू राम यात्री निवास के लिए भूमि पूजन करने के बाद आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कहीं।

भूमि पूजन के बाद दोनों सभाओं की कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई, जिसमें विशेषज्ञों हरियाणा के पूर्व इंजीनियर–इन–चीफ आर. आर. श्योराण, पूर्व चीफ टाऊन प्लानर दिलवाग सिंह सिहाग और जम्मू के आकीटैक्ट राकेश शर्मा द्वारा प्रस्तावित भवन की ड्राइंग व सुचारु तौर पर निमार्ण पर विचार– विमर्श किया गया। बैठक के दौरान भवन निर्मान की आगामी प्रक्रिया और दोनबंधु चौधरी छोटू राम की विशाल प्रतिमा लगाने के लिए स्थान चिन्हित किया गया।

बैठक में निर्णय लिया गया कि चौधरी छोटू राम के जन्मदिन बसंत पंचमी के अवसर पर 10 फरवरी, 2019 को इस यात्री निवास का औपचारिक शिलान्यास किया जाए और इस समारोह में जम्मू–कश्मीर कें राज्यपाल सत्यपाल मलिक,

किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए और बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं। - अज्ञात

चौधरी छोटू राम के नाती केंद्रीय इस्पात मंत्री चौधरी वीरेंद्र सिंह और प्रधानमंत्री कार्यलय में राज्य मंत्री डा. जितेंद्र सिंह को आमंत्रित किया जाए।

1.20 लाख वर्ग फुट पर बनाया जाएगा यात्री निवास, होंगे 300 कमरेः बैठक की अध्यक्षता करते हुए डा. महेंद्र सिंह मलिक ने बताया कि, कामगार, किसान, मजदूर वर्ग के मसीहा चौधरी छोटू राम की याद में लगभग 1.20 लाख वर्ग फुट जमीन पर बनाए जाने वाले विशाल भवन में 300 कमरे होंगे। इसके अलावा कुछ फैमिली सुइट, एक मल्टीपपंज हॉल, कॉफ्रेस हॉल, लाइब्रेरी, मैडीकल डिस्पैंसरी आदी सुविधाओं के साथ 5 लिफ्टें लगाई जाएगी। इस भवन के निर्मान पर करोड़ों की लागत आएगी जिसके लिए समाज सेवियों से स्वेच्छा अनुसार अनुदान अलावा लम्बी अवधी के लिए ऋण लिए जाने पर विचार किया जा रहा है।

डा. मलिक ने कहा कि कटड़ा में वनाया जाने वाला यह 5मंजिला भवन 5 भागों में तैयार किया जाएगा। भवन निर्माण के दैनिक निर्माण कार्य में स्थानीय लोगों को ही काम दिया जाएगा। बैठक में जाट सभा के उप–प्रधान जयपाल पुनिया, महासचिव आर के मलिक, सचिव बी. एस. गिल,वित सचिव राजेंद्र खरव, कार्यकारिणी सदस्य नरेश कुमार व विमल जून और स्थानीय जम्मू सभा के प्रधान शाम चौधरी, राकेश शर्मा आर्कीटैक्ट, अशवनी मट्ट चरण दास , महेंद्र सिंह तथा भूपिंद्र कौर ट्रस्टी आदी ने अपने विचार व सुझाव प्रस्तुत किए।

जाट रेजिमेंट

बाबूराम बालियान

जाट रेजिमेंट के बारे में पाकिस्तानी की राय–'जाट' नहीं होते तो क्या होता?

पाकिस्तानी रिटायर्ड मेजर जनरल फैजल मुकीम खान ने अपनी पुस्तक 'Pakistan crisis in command' में लिखा है कि 'जाट रेजिमंट' भारतीय सेना कि एक अभिन्न अंग होते हुए भी भारतीय सेना जाटों के शौर्य से अनजान ही रही क्योंकि घर की मुर्गी दाल बराबर अर्थात भाारतीय सेना को जाट की वीरता से सीधा वास्ता नहीं पड़ा था केवल दुश्मनों को ही पड़ा था और उन्होंने उनकी शौर्यगाथाएं भी लिखी हैं।

पाकिस्तानी मेजर मुकीम खान ने अपनी पुस्तक के पश्ष्ठ 250 पर जाटों के साथ हुई अपनी 1971 की मुठभेड़ पर लिखते हुये कहा कि हमारी हार का मुख्य कारण है 'हमारा जाटों के साथ आमने सामने युद्ध करना।' हम उनके सामने कुछ भी करने में असमर्थ थे। जाट बहुत बहादुर हैं। ये कई गुना सेना को भी परास्त का सकते हैं। वे आगे लिखते हैं 3 दिसंबर 1971 को हमने अपनी पूर्ण क्षमता के साथ भारतीय सेना पर हुसैनीवाला के समीप आक्रमण किया। हमारी इस ब्रिगेड में पाकिस्तानी लड़ाकू बलूच और अन्य रैजिमेंटस भी थी और हमने कुछ ही क्षणों में भारतीय सेना के पांव पसार दिए थे और सेना को काफी पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। उनकी महत्वपूर्ण चौकीयां हमारे कब्जे में थी। अब हमारी सेना के शरे हिन्द पोस्ट के समीप पहुंच चुकी थी लेकिन भारतीय सेना की एक छोटी सी टुकड़ी 'जाट रेजिमेंट' वहां पर तैनात थी। इस छोटी सी टुकड़ी ने लोहे की दीवार बनकर हमारा रास्ता रोक लिया। उन्होंने हम पर भूखे शेरों की तरह आक्रमण कर दिया। ये सभी सैनिक जाट थे। यहां एक आमने सामने की लड़ाई हुई और जाट रेजिमेंट की इस छोटी सी टुकड़ी ने हमारे सारे सपने तोड़ दिए।

केवल यही नहीं गजनी स्थित महमूद गजवनी की मजार से दरवाजा उखाड़ लाई थी जाट बटालियन वर्ष 1842 में। प्रथम अफगाना युद्ध के दौरान बंगाल नेटिव आर्मी की एक जाट बटालियन गजनी स्थित महमूत गजवनी की मजार से 6 सितबंर को दरवाजा उखाड़ लाई थी और इसे आगरा के किले में लाकर रख दिया। इस घटना से ब्रिटिश सरकार भी हिल गयी थी।

भरतपूर के महाराजा सूरजमल सिंह जाट उनका कद 7 फुट 2 इंच, वजन 3 क्विंटल 18 किलो। दोनों हाथों से एक साथ तलवार चलाने में माहिर। 20 अगस्त 1748 में बागरू की लड़ाई में भारी बारिश के बीच 5 घाव होने के बावजूद अकेले ही 160 दुश्मनों को मौत के घाट उतार दिया था। एशिया के बहुत से देश उनसे मदद मांगने आते थे। सारे राजपूत व मुस्लिम आक्रमणकारी उनसे खौफ खाते थे। मुगल, मराठे, राजपूत व अंग्रेज उन्हें कोई नहीं हरा पाया।

उनके अलावा पीछे खड़े उनके उत्तराधिकारी बेटे महाराजा जवाहर सिंह जाट ने दिल्ली जाकर मुगलों को बड़ी बेरहमी से पीटा और मुगलों को सुरक्षा कवच कहे जाने वाले दरवाजे को उखाड़ कर भरतपुर में ला पटका जो आज भी भरतपुर के लोहागढ़ किले में रखा है।

जाट कोई कौम नहीं और ना ही कोई यूनियन। जाट खुद एक काल है वेद है, शास्त्र है, समय है और एक अमिट अपार शक्ति है। शिवाजी के अंश से पैदा हुई उर्जा का अंश है जाट। इस पृथ्वी पर वर्तमान में 42 करोड़ 43 लाख जाट हैं। सबसे ज्यादा जाटों की जनसंख्या वाला देश हिंदुस्तान 4 करोड़ 68 लाख। सबसे ज्यादा प्रतिशत जाट जनसंख्या वाला राज्य हरियाणा 25 प्रतिशत जाट हैं। जाट के देश है– हिंदुस्तान, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, तिब्बत, मयंमार, चीन, अफगानिस्तान, तुर्किस्तान आदि।

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। – रवींद्रनाथ ठाकुर

GLAMMON Mrs India Congeniality 2018 achiever

I am Ameeta Raj Chaudhary (JAAT) who participated in a Glammonn Mrs. India 2018, and represented Chandigarh. I have achieved the title of Mrs. India Congeniality there on 8th October,2018. The event held in delhi itself. The jury included - Raveena Tandon, Ritu Shivpuri, Ameeta Nangia, Mann Dua, and some renowned fashion and style people.

I have been chosen as a final contestant and i chose this platform to explore myself and the capabilities i had but never knew.

Its been a short n crisp journey of ten days with the grooming sessions with renowned show director Mr. Pranav Hamal. We had different classes of diction and makeovers. We use to get up at 4 am, ready by 6 am and than classes of walk, speech, diction, confidence, positive attitude, meditation, makeups, makeover s, styling hair, clothes etc.

We had the contestants of MRS., MS., MR. from all over the India and it was a very different experience altogether staying together with every one.

I am married for 7 years and have 2 girls. I went to represent as a daughter of a mother and as a mother of daughters.

Its too much to write in words, sending you the links!!

आइए जानें, कौन थे ये महापुरूष जिनके नाम पर रखे पांच मेट्रो स्टेशन के नाम

– बी.एस.गिल

हरियाणा सरकार ने प्रदेश के पांच मेट्रो स्टेशनों के नाम बदल दिए हैं। बहादुरगढ़ मेट्रो लाइन के तीन और बल्लभगड़ मेट्रो लाइन के दो स्टेशनों का नाम बदला गया है। दो मेट्रो स्टेशनों के नाम जाट समाज के ऐसे दो रत्नों के नाम पर रखे गए हैं जिनकी महिमा के बारे में बीचो बीचे को बताए जाने की जरूरत है। आदेशों के अनुसार अब अब बल्लभगढ़ मेट्रो स्टेशन का नया नाम अमर शहीद राजा नाहर सिंह मेट्रो स्टेशन होगा और बहादुरगढ सिटी पार्क मेट्रो स्टेशन का नाम ब्रिगेडियर होशियार सिंह मेट्रो स्टेशन के नाम पर खा गया है। आइए जानते हैं कि इन महापुरुषों के बारे में।

राजा नाहर सिंहः देश को आजादी दिलाने की पहली कोशिश 1857 में हुई। तब दिल्ली के बीस मील पूर्व में जाटों की एक रियासत थी। इस रियासत के नवयुवक राजा नाहरसिंह बहुत वीर, पराक्रमी और चतुर थे। गुलामी की बेडियों की जकडन से वो देश को आजाद कराने के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार थे। उस समय उनकी ख्याति इतनी थी कि दिल्ली के मुगल दरबार में उनके लिए सोने की कुर्सी रखी जाती थी। मेरठ के क्रांतिकारियों ने जब दिल्ली पहुंचकर उन्हें ब्रितानियों के चंगुल से मुक्त कर दिया और मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को फिर सिंहासन पर बैठा दिया तो प्रश्न खडा हुआ कि दिल्ली की सुरक्षा का दायित्व किसे दिया जाए? इस समय तक शाही सहायता के लिए मोहम्मद बख्त खां पंद्रह हजार की फौज लेकर दिल्ली चुके थे। उन्होंने भी यही उचित समझा कि दिल्ली के पूर्वी मोर्चे की कमान राजा नाहरसिंह के पास ही रहने दी जाए। बहादुरशाह जफर तो नाहरसिंह को बहुत मानते ही थे। ब्रितानी दासता से मुक्त होने के पश्चात दिल्ली ने 140 दिन स्वतंत्र जीवन व्यतित किया। इस काल में राजा नाहरसिंह ने दिल्ली के पूर्व में अच्छी मोर्चाबंदी कर ली। उन्होंने जगह-जगह चौकियां बनाकर रक्षक और गुप्तचर नियुक्त कर दिए। ब्रितानियों ने दिल्ली पर पूर्व की ओर से आक्रमण करने का कभी साहस नहीं दिखाया। 13 सितंबर 1857 को ब्रितानी फौज ने कश्मीरी दरवाजे की ओर से दिल्ली पर आक्रमण किया। ब्रितानियों ने जब दिल्ली नगर में प्रवेश किया तो भगदड़ मच गई। बहादुरशाह जफर को भी भागकर हुमायूं के मकबरे में शरण लेनी पड़ी। नाहरसिंह ने सम्राट बहादुरशाह से वल्लभगढ चलने के लिए कहा, पर सम्राट के ब्रितानी भक्त सलाहकार इलाहिबख्श ने एक न चलने दी और उन्हीं के आग्रह से बहादुरशाह हुमायूँ के मकबरे में रुक गए। इलाहिबख्श के मन में बेईमानी थी। परिणाम वही हुआ जो होना था। मेजर हडसन ने बहादुरशाह को हुमायूँ के मकबरे से गिरफ्तार कर लिया और उनके शाहजादों का कत्ल कर दिया। नाहरसिंह ने बल्लभगठ पहुंचकर ब्रितानी फौज से मोरचा लेने का निश्चय किया। उन्होंने नए सिरे से मोरचाबंदी की और आगरा की ओर से दिल्ली की तरफ बढनेवाली गोरी पलटनों की धज्जियां उड़ा दी। बल्लभगढ़ के मोर्चे में बहुत बड़ी संख्या में ब्रितानियों का कत्ल हुआ और हजारों गोरों को बंदी बना लिया गया। इतने अधिक ब्रितानी सैनिक मारे गए कि नालियों में से खून बहकर नगर के तालाब में पहुँच गया और तालाब का पानी भी लाल हो गया। जब ब्रितानियों ने देखा कि नाहरसिंह से पार पाना मुश्किल है तो उन्होंने धूर्तता से काम लिया। उन्होंने संधि

का सूचक सफेद झंडा लहरा दिया। युद्ध बंद हो गया। ब्रितानी फौज के दो प्रतिनिधि किले के अंदर जाकर राजा नाहरसिंह से मिले और उन्हें बताया कि दिल्ली से समाचार आया है कि सम्राट बहादुरशाह से ब्रितानियों की संधि हो रही है और सम्राट के शुभचिंतक एवं विश्वासपात्र के नाते परामर्श के लिए सम्राट ने आपको याद किया है। उन्होंने बताया कि इसी कारण हमने संधि का सफेद झड़ा फहराया है। भोले-भाले जाट राजा धूर्त ब्रितानियों की चाल में आ गए। अपने पाँच सौ विश्वस्त सैनिकों के साथ वह दिल्ली की तरफ चल दिए। दिल्ली में राजा को समाप्त करने या उन्हें गिरफ्तार करने के लिए बहुत बड़ी संख्या में पहले ही ब्रितानी फौज छिपा दी गई थी। राजा का संबंध उनकी सेना से विच्छेद कर दिया और राजा नाहरसिंह को गिरफ्तार कर लिया। शेर ब्रितानियों के पिंजरे में बंद हो गया। अगले ही दिन ब्रितानी फौज ने पूरी शक्ति के साथ वल्लभगढ पर आक्रमण कर दिया। तीन दिन के घमासान युद्ध के पश्चात ही वे राजाविहीन राज्य को अपने आधिपत्य में ले सके। जिस हडसन ने सम्राट बहादुरशाह जफर को गिरफ्तार किया था उसी हडसन के बंदी नाहरसिंह को ले जाया गया। ब्रितानियों की ओर से उनके सामने मित्रता का प्रस्ताव रखा। वह नाहरसिंह के महत्व को समझ सकता था। मित्रता का प्रस्ताव रखते हुए वह बोला- नाहरसिंह मैं आपको फाँसी से बचाने के लिए ही कह रहा हूँ कि आप थोड़ा झुक जाओ। नाहरसिंह ने हडसन का अपमान करने की दृष्टि से उनकी ओर पीठ कर ली और उत्तर दिया- नाहरसिंह वह राजा नहीं है जो अपने देश के शत्रुओं के आगे झुक जाए। ब्रितानी लोग मेरे देश के शत्रु हैं। मैं उनसे क्षमा नहीं माँग सकता। एक नाहरसिंह न रहा तो क्या, कल लाख नाहरसिंह पैदा हो जाएँगे। मेजर हडसन इस उत्तर को सुनकर बौखला गया। बदले की भावना से ब्रितानियों ने राजा नाहरसिंह को खुलेआम फांसी पर लटकाने की योजना बनाई। जहाँ आजकल चांदनी चौक फव्वारा है, उसी स्थान पर वधस्थल बनाया गया, जिससे बाजार में चलने-फिरने वाले लोग भी राजा को फांसी पर लटकता हुआ देख सकें। उसी स्थान के पास ही राजा नाहरसिंह का दिल्ली स्थित आवास था। ब्रितानियों ने जानबूझकर राजा नाहरसिंह को फाँसी देने क लिए वह दिन चुना, जिस दिन उन्होंने अपने जीवन के पैंतीस वर्ष पूरे करके छतीसवें वर्ष में प्रवेश किया था। राजा ने फांसी का फंदा गले में डालकर अपना जन्मदिन मनाया। उनके साथ उनके तीन और नौजवान साथियों को भी फंदों पर झुलाया गया। वे थे खुशालसिंह, गुलाबसिंह सैनी और भूरेसिंह। दिल्ली की जनता ने गर्दन झुकाए हुए अश्रुपूरित नयनों से उन लोकप्रिय एवं वीर राजा को फंदे पर लटकता हुआ देखा। फाँसी पर झुलाने के पूर्व हडसन ने राजा से पूछा था - आपकी आखिरी इच्छा क्या है? राजा का उत्तर था - मैं तुमसे और ब्रितानी राज्य से कुछ मांगकर अपना स्वाभिमान नहीं खोना चाहता हूँ। मैं तो अपने सामने ख़डे हुए अपने देशवासियों से कह रहा हूं क्रांति की इस चिनगारी को बुझने न देना। ऐसे थे जाट समाज में जन्मे महान राजा नाहर सिंह। मेट्रो स्टेशन का नाम उनके नाम पर रखे जाने से हमारी आने वाली पीढियों को उनके बारे में जानने और देशप्रेम के उच्चे विचारों की प्रेरणा मिलेगी।

परमवीर चक्र विजेता बिग्रेडियर होशियार सिंह दहिया: होशियार सिंह दहिया का जन्म 5 मई, 1936 को सोनीपत, हरियाणा के एक गांव सिसाना में हुआ था। उनकी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा स्थानीय हाई स्कूल में तथा उसके बाद जाट सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में हुई। वह एक मेधावी छात्र थे। उन्होंने दसवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की थी। पढ़ाई के साथ-साथ वह खेल कूद में भी आगे रहते थे। होशियार सिंह पहले राष्ट्रीय चैम्पियनशिप के लिए बॉलीबाल की पंजाब कंबाइंड टीम के लिए चुने गए और वह टीम फिर राष्ट्रीय टीम चुन ली गई जिसके कैप्टन होशियार सिंह थे। इस टीम का एक मैच जाट रेजिमैटल सेंटर के एक उच्च अधिकारी ने देखा और होशियार सिंह उनकी नजरों में आ गए। इस तरह होशियार सिंह के फौज में आने की भूमिका बनी। 1957 में उन्होंने 2 जाट रेजिमेंट में प्रवेश लिया बाद में वह 3 ग्रेनेडियर्स में कमीशन लेकर अफसर बन गए। 1971 के युद्ध के पहले, होशियार सिंह ने 1965 में भी पाकिस्तान के ख़लिाफ़ लड़ते हुए अपना करिश्मा दिखाया था। बीकानेर सेक्टर में अपने क्षेत्र में आक्रमण पेट्रोलिंग करते हुए उन्होंने ऐसी महत्त्वपूर्ण सूचना लाकर सौंपी थी, जिसके कारण बटालियन की फ़तह आसानी से हो गई थी और इसके लिए उनका उल्लेख'मैंशंड इस डिस्पैचेश'में हुआ था। फिर, 1971 का युद्ध तो उनके लिए निर्णायक युद्ध था जिसमें उन्हें देश का सबसे बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ।

1965 में पाकिस्तान के खिलाफ जीत को आसान बनाने में होशियार सिंह की दी गई महत्वपूर्ण सूचना का खास यो÷दान था। 1971 में हुए भारत-पाक युद्ध के अंतिम 2 घंटे पूर्व तक, जब युद्ध विराम की घोषणा की गई और दोनों सेनाएं एक-दूसरे के सैनिकों को खत्म करने का भरसर प्रयास कर रही थीं, तब भी होशियारसिंह घायल अवस्था में भी डटे रहे और लगातार दुश्मन सिपाहियों को एक के बाद एक रास्ते से हटाते रहे। वे लगातार अपने साथियों का हौसला बढ़ाते रहे। मेजर होशियारसिंह की बटालियन जीत दर्ज करा चुकी थी। इसके लिए मेजर सिंह को परमवीर चक्र प्रदान किया गया।

भारत-पाकिस्तान युद्ध: स्वतन्त्र भारत ने अब तक पाँच युद्ध लड़े जिनमें से चार में उसका सामना पाकिस्तान से हुआ। यह युद्ध शुरू भले ही पाकिस्तान ने किया हो, उनका समापन भारत ने किया और विजय का सेहरा उसी के सिर बंधा। इन चार युद्धों में एक युद्ध जो 1971 में लड़ा गया वह महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है क्योंकि इस लड़ाई ने पाकिस्तान को पराजित करके एक ऐसे नए राष्ट्र का उदय किया, जो पाकिस्तान का हिस्सा था और वर्षों से पश्चिम पाकिस्तान की फौजी सत्ता का अन्याय सह रहा था। वही हिस्सा, पूर्वी पाकिस्तान, 1971 के युद्ध के बाद बांग्लादेश बना। जब से पाकिस्तान बना, तब से पश्चिम पाकिस्तान सत्ता का केंद्र बना रहा। वह मुस्लिम बहुल इलाका था। दूसरी ओर पूर्वी पाकिस्तान, पूर्वी बंगाल था जो विभाजन के बाद पाकिस्तान में आ गया था। यह हिस्सा बांग्ला भाषियों से भरा था। इस तरह पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान दो अलग-अलग भाषायों और संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते थे। इसका नतीजा यह था कि पश्चिम पाकिस्तान की मुस्लिम बहुल सत्ता का व्यवहार, अपने ही देश के एक हिस्से से बेहद अन्यायपूर्णक तथा सौतेला होता था, भले ही देश का हिस्सा ख़ासा

वैभव और सम्पदा सरकार को देता था। 7 अगस्त 1970 को हुए पाकिस्तान के चुनाव में जनमत का एक नया चेहरा से सामने आया, जिसमें शेख मुजीबुर्रहमान की पार्टी अवामी लीग ने बेहद भारी बहुमत से जीत हासिल की। स्थिति यह बनी कि आवामी लीग की सरकार सत्ता में आ जाए। इस बात के लिए पश्चिम पाकिस्तान का शासन कतई तैयार नहीं थ। उस समय जुल्फिकार अली भट्टो प्रधानमंत्री थे, तथा याहना खान राष्ट्रपति पद पर बैठे थे। बांग्ला बहुल अवामी लीग की सरकार बनने से रोकने के लिए इन दोनों ने नई विजेता असेंबली के गठन पर बंदिश लगा कर रोक दिया।

मेजर होशियार सिंह इसी बटालियन में थे और उन्हें आदेश मिला कि वे अपने साथियों के साथ पाकिस्तान के जरपाल वाली चौकी पर कब्जा करें। जरपाल का यह पाकिस्तानी चौकी बहुत सुरक्षित स्थान पर था और इस चौकी पर पाकिस्तानी सैनिकों की संख्या अधिक थी। होशियार सिंह और उनके साथियों पर लगातार पाकिस्तानी मीडियम मशीनगन से गोलियों की बौछार सहनी पड़ी और स्वयं को बचाते आगे बढ़ रहे थे, सहसा उन्होंने अपने चारों तरफ देखा और स्तब्ध रह गए. उनके चारों ओर उनके साथियों के शव ही शव दिखाई पड़ रहा था। एक क्षण के लिए मेजर होशियार सिंह क्रोध, दुख और भय की स्थिति में थे परंन्तु उन्होनें अपने ऊपर इन सभी का असर पड़ने नहीं दिया। चिन्ता की स्थिति से निपटने की और भय रहित होकर आक्रमण करने के लिए स्वयं को तैयार कर लिया। इतना ही नहीं बल्कि उन्होनें अपने बचे साथियों से भी श्ाोरदर शब्दों में कहा कि वे बहादुरी से लड़ते रहें मेजर होशियार सिंह ने कहा कि बहादुर लोग केवल एक बार मरते हैं, तुम्हें युद्ध करना ही है और तुम्हें विजय प्राप्त करनी है। उनके सैनिकों को उनकी बातों ने प्रेरित किया और इसके बाद तो फिर घमासान युद्ध होने लगा और 15 दिसंबर 1971 को वे अपने लक्ष्य में सफल हो गए। 1 9 71 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान, तीसरे ग्रेनेडीर्स को 15 मार्च, 17, 1 9 71 को शाकगढ़ सेक्टर में बसंतार नदी के किनारे एक पुल का निर्माण करने का कार्य दिया गया था। यह नदी दोनों तरफ गहरी खानों से ढकी हुई थी और अच्छी तरह से संरक्षित थी पाकिस्तानी सेना द्वारा रक्षात्मक रक्षा कमांडर'सी'कंपनी मेजर होशियार सिंह को जारपाल की पाकिस्तानी इलाके पर कब्जा करने का आदेश दिया गया था। पाकिस्तानी सेना ने प्रतिक्रिया व्यक्त की और तेज मुठभेड़ों में डाल दिया। मेजर होशियार सिंह खाई से चोटी से चले गए, अपनी कमान को प्रेरित करते हुए और अपने लोगों को तेजी से खड़े होने और लड़ने को प्रोत्साहित करते हुए परिणामस्वरूप उनकी कंपनी ने पाकिस्तानी सेना पर भारी हताहत करने वाले सभी हमलों को खारिज कर दिया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, मेजर होशियार सिंह ने युद्ध विराम तक खाली करने से इनकार कर दिया। इस ऑपरेशन के दौरान, मेजर होशियार सिंह ने सेना की सर्वोच्च परंपराओं में सबसे विशिष्ट वीरता, अदम्य लड़ भावना और नेतृत्व का प्रदर्शन किया। उनकी बहादुरी और नेतृत्व के लिए उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। निश्चित रूप से जाट समाज में जन्में इस अदम्य शूरमा की कहानी और मेट्रो स्टेशन से नाम जुडने पर प्रचार व प्रसार होगा।

चर्चा में हैं हरियाणा की ये दो बेटियां, एकता याण और मनु भाकर

अक्टूबर महीने में एक ही दिन हरियाणा की दो बेटियों ने खेल में बडी उपलब्धि हासिल की। एशियन पैरा गेम्स में हिसार की एकता भ्याण ने सोना जीता वहीं यूथ ओलंपिक में झज्जर की मनु भाकर ने शूटिंग में सोना जीता है। दोनों बेटियों ने एक ही दिन 8 अक्टूबर को अलग अलग जगहों पर ये मेडल जीते हैं। आइए जानते हैं इन दोनों के उडान पर एक नजर।

एकता भ्याणग छोटी से दिक्कत आने पर भी हम अक्सर परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देते हैं। मगर इरादे मजबूत हों तो कुछ भी नामुमकिन नहीं। इसका जीता जागता उदाहरण है हिसार के अर्बन एस्टेट की एकता भ्याण। जिन्होंने सड़क हादसे में दोनों पांव गवां देने के बावजूद हिम्मत नहीं हारी और आज वो अपना नाम देश में ही नहीं बल्कि देश का नाम विदेशों में चमका रही है। एक बार फिर एकता ने मिसाल पेश करते हुए इंडोनेशिया के जर्काता में एशियन पैरा गेम्स में गोल्ड मेडल जीता है। वह अपने हरेक मेडल की जीत का श्रेय अपने पिता बलजीत भ्याण और कोच अमित सिरोहा को देती हैं। एकता फिलहाल हिसार के रोजगार कार्यालय में सहायक रोजगार अधिकार के पद पर हैं। 100 प्रतिशत फिजिकली चैलेंज्ड होने के बावजूद उन्होंने हौसले की मिसाल कायम की है। नौकरी के साथ-साथ ट्रैक पर भी उन्होंने बेहतरीन परफॉर्मेंस दी। वह बताती हैं कि इसके लिए उन्होंने रोजाना महज दो घंटे प्रैक्टिस की। ड्यूटी के बाद वह एक प्राइवेट स्कूल में रोजाना प्रैक्टिस करती हैं। एकता भ्याण के पांव काम नहीं करते। एकता ने बताया मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती मैं खुद थी। मेरा शरीर मेरा साथ नहीं दे रहा था। मेरा आत्मविश्वास खत्म हो चुका था। बिना व्हील चेयर के मैं कहीं भी आ जा नहीं सकती हूं। आस पास के लोग ताने मारने लगे कि मैं घर पर बोझ बन गयी हूं तो ऐसी स्थिति में आपका मानसिक सन्तुलन बनाना ही आपके लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। इस चुनौती का सामना मुझे मेरे पापा ने कराया उन्होंने मुझे इस बात पर विश्वास दिलवाया कि मैं बोझ नहीं हूं । मुझे अपने दिल की बात सुननी चाहिए न कि लोगों की।

एकता ने बताया कि एक्सीडेंट के बाद में मेरे शरीर के नीचे के हिस्से ने काम करना बन्द कर दिया और मैं व्हील चेयर पर आ गयी। मैंने अपने आप को घर घर पर ही सीमित कर लिया था, लोगों से मिलना बन्द कर दिया था। ऐसे में कॉलेज में इतने सारे लोगों का एक साथ सामना करना मेरे लिए चुनौती थी। रैम्प ना होने की वजह से मुझे बहुत परेशानी होती थी। ये परेशानी मुझे हर जगह होती है मॉल में, थिएटर में, कॉलेज में। जबकि विदेशों में हर जगह रैम्प बनी हुई है। लॉ फ्लोर बसें चलती है जिससे किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होती । भारत में भी ऐसे सुधार की आवश्यकता है।

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। - रवींद्रनाथ ठाकुर

मनु भाकरः यूथ ओलिंपिक में भारत का शानदार प्रदर्शन किया है। 8 अक्टूबर को 15 साल के जेरेमी लालरिनुंगा के भारत को पहला गोल्ड मेडल दिलाने के बाद मनु भाकर ने महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल में पीला तमगा हासिल किया। मनु ओलिंपिक स्तर पर स्वर्ण जीतने वाली भारत की पहली महिला शूटर हैं। उनसे पहले सीनियर या जूनियर वर्ग में भारत ने कभी कोई स्वर्ण पदक नहीं जीता था। यूथ ओलिंपिक के इतिहास में भी शूटिंग में भारत का यह पहला स्वर्ण पदक है। भारत के इस टूर्नामेंट में अब दो स्वर्ण और तीन रजत समेत पांच पदक हो गए हैं। वह पदक तालिका में तीसरे नंबर पर है। झज्जर की इस बेटी ने फाइनल में 236.5 का स्कोर किया और पहले स्थान पर रहीं। वे क्वालिफाइंग राउंड में भी 576 के स्कोर के साथ शीर्ष पर रही थीं। 16 साल की यह निशानेबाज अप्रैल में ऑस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में हुए कॉमनवेल्थ गेम्स में भी स्वर्ण पदक जीतने में सफल रही थी। हालांकि, जकार्ता एशियाई खेलों में वे पदक जीतने से चूक गई थीं। मनु इस साल आईएसएसएफ वर्ल्ड कप में 10 मीटर एयर पिस्टल की निजी और टीम स्पर्धा में भी स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं। महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल में रूस की इयाना एनिना ने 235.9 अंक के साथ रजत और जॉर्जिया की नीनो खुत्सीबेरिड्ज ने 214.6 अंक के साथ कांस्य पदक जीता। इस साल मनु भाकर एक से 12 मार्च तक मैक्सिको के गुआडालाजारा में हुई आईएसएसएफ वर्ल्ड चैम्पियनशिप में व्यक्तिगत और टीम इवेंट में स्वर्ण पदक जीता। मार्च में ही ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में हुए आईएसएसएफ जूनियर विश्वकप में अलग-अलग कैटेगरी में दो स्वर्ण पदक अपने नाम किए। अप्रैल में गोल्ड कोस्ट कॉमनवेल्थ गेम्स में 10 मीटर एयर पिस्टल में देश को सोना दिलाया। अक्टूबर में यूथ ओलिंपिक में स्वर्ण पदक जीता है।

साढ़े पांच हजार किलो लोहे से बनी दीनबंधु की प्रतिमा

– मंजू श्यारोण

दीनबंधु चौधरी छोटूराम की सांपला में 64 फुट की प्रतिमा का अनावरण करने नौ अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनकी जन्मस्थली गढी सांपला पहुंचकर किया। वैसे तो चौधरी छोटूराम की देश में अनेक जगहों पर प्रतिमाएं हैं लेकिन ये उनमें से सबसे बडी है और इस प्रतिमा का निर्माण चौधर छोटूराम विचार मंच के बैनर तले करवाया गया है। सांपला में चौधरी छोटूराम संग्रहालय में इसे स्थापित किया गया है। चौधरी छोटूराम के जन्मस्थान गढ़ी सांपला में बनने वाली प्रतिमा दीनबंधु की प्रदेश की सबसे बड़ी है। प्रतिमा पर करीब दो करोड़ रुपये की लागत आई और साढ़े पांच हजार किलोग्राम लोहे के साथ ही देश की नौ नदियों का जल प्रयोग किया गया है। जिनमें मुख्य रूप से पंजाब की पांच (वर्तमान में दो पाकिस्तान), हरियाणा की दो के अलावा गंगा, जमुना, सरस्वती, घग्घर और सतलुज हैं। इसके लिए प्रदेश के पांच हजार गांवों से अब तक करीब साढ़े पांच हजार किलो लोहा जमा किया गया इस लोहे को इक्ट्ठा करने के बाद इसे दिल्ली भिजवाया गया और वहां पर पिघलाकर इसे शेप में ढाला गया। ?पूरी तरह से तैयार होने के बाद इसे सांपला में लाया गया।

दीनबंधु सर छोटूराम की मूर्ति को दिल्ली की राम वी सुथार की वर्कशॉप में तैयार करवाया गया। इसको दिल्ली निवासी पदम भूषण पुरस्कार राम वी सुतार ने दो महीने में तैयार किया। राम वी सुथार ने देश में अनेक मूर्तियों का निर्माण किया है। पिछले साल 17 नवंबर को दिल्ली से इस प्रतिमा को दीनबंधु संग्राहलय तक करीब चालीस टायरों के ट्रक पर लाया गया था और रास्ते में कई जगह पर ट्रेफिक की व्यवस्था बनाने में पुलिसकर्मियों को लगाया गया था। ?इसके बाद इसे यहां चबूतरा बनाकर स्थापित किया गया। ? शिल्पकार राम वी. सुतार मूल रूप से महाराष्ट्र के एक गांव (गोंदूर) के रहने वाले हैं. उनके पिता कारपेंटर थे और इस नाते उन्हें शिल्प कला विरासत में मिली थी। ? शुरुआती पढ़ाई-लिखाई गांव में ही हुई और उसी दौरान गुरु श्रीराम कृष्ण जोशी से मिट्टी में जान डालने की कला यानी शिल्पकारी सीखना शुरू किया। वर्ष 1958 में वह दिल्ली आ गए। ?शुरुआत में कुछ दिनों तक लक्ष्मीनगर रहे और उसके बाद नोएडा में अपना स्टूडियो स्थापित किया। ?संसद भवन परिसर में लगी महात्मा गांधी की 17 फिट उंची प्रतिमा भी उन्होंने ही बनाई है। इसके अलावा पटना के गांधी मैदान, कर्नाटक विधानसभा के साथ-साथ उनकी बनाई बापू की प्रतिमा 300 से ज्यादा देशों में लग चुकी है। ?गुजरात में लगने वाली स्टैच्यू ऑफ यूनिटी को राम वी सुतार ने ही डिजाइन किया है और इन्की के मार्गदर्शन में प्रतिमा को स्थापित किया गया।

जाट महान-वायुसेना का विमान कंधों पर सुरक्षित निकाला

हिम्मत-ऐ-मर्दा, मदद-ए-खुदा। यह कहावत जाट समुदाय पर अक्षरतः लागू होती है। जहां भी, जब भी विपदा आई, स्थानीय जाटों ने अपने अदम्य साहस से उसका निवारण किया। इस जांबाज समुदाय में स्वाभिमान व आत्मविश्वास तो ईश्वरीय देन है। प्राकृतिक आपदा - आग, भूकंप, सूखा या बाढ़ आई तो इस समुदाय ने कभी किसी को भी मदद के लिए पुकारा बल्कि अपने दुख दर्द भूलकर आगे बढ़कर दूसरों की भरपूर मदद की। यही नहीं इस समुदाय में देशभक्ति भी कूट-कूटकर भरी है, फिर चाहे आत्म रक्षा हो या देश की सरहदों की सुरक्षा। युद्ध के समय भी यह समुदाय सदैव राष्ट्र प्रहरी बनकर अग्रि पंक्ति में खड़ा मिलता है। उदाहरणतः चंद दिनों पूर्व उत्तर प्रदेश में बागपत के रंछाड़ गाांव के खेतों में वायुसेना का एक विमान हादसा हुआ, जिसमें वायुसेना के चालक ने विमान को बड़ी सावधानी से खेतों में पैराशूट किया क्योंकि इस विमान में पायलट के कूद्ने का प्रावधान तो नहीं है लेकिन दो सीटों वाला वायरस माईक्रोलाइट कैटेगरी का यह गरूड़ विमान आपातकाल स्थिति में पूरा विमान ही पैराशूट हो जाता है।

आपातकाल स्थिति में विमान के पैराशूट होकर खेतों में गिरते ही वायुसेना ने शीघ्र कार्यवाही करते हुए विमान को उठाने हेतू क्रेन आदि की व्यवस्था की लेकिन इससे पूर्व ही जाट समुदाय के युवाओं ने पूरे विमान को अपने मजबूत कंधों पर उठाकर बिना कोई क्षति के सुरक्षित खेतों से बाहर निकाल लिया। इस प्रकार के जोखिम भरे कार्य को केवल जाट समुदाय ही कर सकता है। ऐसी महान शक्ति को पूरा राष्ट्र नम्र करता है।

अनुभव की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं, वे पुस्तकों और विश्वविद्यालयों में नहीं मिलते। - अज्ञात

ईब दिल्ली म्हारी कोन्या

– सूरजभान दहिया

ईगलैंड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री चर्चिल ने कहा था 'जितना ज्यादा आप भूतकाल की ओर जाते हो उतना आगे आप भविष्य को देख रहे हो।' यदि मैं दिल्लू जाट की दिल्ली के भूत को देखता हूं तो मैं पाता हूं कि दिल्ली सात फेजो में बसी और फैली। हरेक फेज की प्रक्रिया में जाटों ने अपनी भूमि की मलकियत को खोया और वे अपनी जन्मभूमि के गौरव को गवाते रहे। इस सैटलमेंट प्रक्रिया में तोमर राजाओं ने सन् 736 में पहली दिल्ली के 'लालकोट' को निर्मित किया था। दिल्ली के दूसरे फेज 'सिरी क्षेत्र' को अलादीन खिलजी ने सन् 1303 में बनाया, सन् 1321 में ग्यासुदीन तुगलक ने दिल्ली का तीसरा फेज 'जहांपना' के रूप में विकसित किया। इसके बाद उसके उत्तराधिकारी फिरोज तुगलतक ने चौथी दिल्ली यमुना नदी के किनारे 'फिरोजाबाद' बनाकर सन् 1354 में उसको अपनी राजधानी बनाया। सन् 1540 में शेरशाह सूरी ने 'पुराना किला' बनाया और वहां अपनी राजधानी बनाई। छठी दिल्ली को शाहजहां ने 17वीं सदी में 'शाहजहानाबाद' के नाम से निर्मित किया। सातवीं दिल्ली अंग्रेजों ने 'नई दिल्ली' के रूप में विकसित करके सन् 1911 में भारत की आधुनिक राजधानी बनाई।

आजादी से पहले नई दिल्ली को बनाने के लिए पचास गांव उजाड़े गये। आजादी के बाद पहले दशक में भी नई दिल्ली के फैलाव हेतु पचास गांवों की बलि चढ़ी। आप रायसीना, मालचा, शाहपुरजाट, मुनिरका आदि गांवों से परिचित हैं। इन गांवो के खेतों में साउथ दिल्ली, राष्ट्रपति भवन, नार्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉक, भव्य कॉलोनियां जैसे ग्रेटर कैलाश, मालवीय नगर, एन्डरूगंज आदि चमक–दमक रहे हैं। पर यहां के विस्थापित जाट परिवारों की पीड़ा का अनुभव कीजिये। विस्थापन से उन्हें रियूजी, मुहाजिर व भू–बलिया (गाडिया लोहार) बनना पड़ता है।

यह कैसी त्रास्दी है कि गांव मालचा के जाट परिवारों को उजाड़ दिया। आज तक उन्हें मुआवजा नहीं मिला। वे क्यों हरसाना गांव (जिला सोनीपत) में भू–बलियों की भांति जीवन बीताने के लिए बाघीत हुये? क्या सरकार ने इस पीड़ादायक स्थिति का संज्ञान लिया? शाहपुरजाट के किसानों की जमीन 2.75 रूपये गज की दर से छिनी और उन्हें आज कैदियों की भांति लालडोरे के भीतर कष्टदायक जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है– न उनके पास गोरा है न शामलात जमीन है न कोई ग्रीनब्लैंट है जबकि उनकी जमीन में बसे ग्रेटर कैलाश में भव्य पार्क हैं, विस्तृत लांग स्पेस है, सामुदायिक केंद्र तथा अन्य सभी आधुनिक सुविधाएं है। यह विरोधाभास क्यों?

समाजशास्त्री कहते हैं कि "Delhi is a big village" दिल्ली राज्य के राजस्व विभाग के अनुसार दिल्ली में 275 गांव हैं। आज इनमें से ज्यादातर गांव सिर्फ नाम के गांव हैं। उन्हें शहरीकरण ने निगल लिया है। महरोली, होजखास, चिराग दिल्ली, महीपालपुर, बिजवासन, पूठकला और कितने गांवों का उल्लेख किया जाये। सभी तो प्राकृतिक सौंदर्य से वंचित नरकगांव बन गये हैं। दिल्ली की लगभग 1.70 करोड़ की आबादी में जाटों की हैसियत ही क्या बची है? क्या हमने कभी इस संबंध में बैठकर गहराई से सोचा है? सच्चाई तो यह है कि हमारा न कोई 'थिंक टैंक'है और न ही 'जाट समाज सगंठन' दिल्ली का जाट समाज अधोपतन की स्थिति में है। क्यों हम यह सोचने में मजबूर नहीं होते कि हमारी यह दयनीय दशा कैसे बनती जा रही है? 'दिल्लू जाट' द्वारा बसाई गई दिल्ली से नई दिल्ली तक का हमारा सफर कैसा रहा? प्रश्न पर प्रश्न इस संदर्भ में जुड़ते जाते हैं पर उत्तर नहीं मिलता।

आओ इन प्रश्नों का उत्तर ढूढ़ने के लिए इतिहास का अध्ययन करें। क्या आप मिर्जा गालिब को जानते है? उसे हमने कभी दिल्ली वाले का सम्मान नहीं दिया। फिर भी हमें वे यह शेर कहकर चिताते रहते थे– 'ओ नादान दिल्ली वालों, किस गफलत में हो तुम! यह ठगो की बस्ती है, न दरियागंज का कारवां रहेगा न पहाडी धीरज का।' कैसी भविष्यवाणी की थी गालिब शायर ने। आज जाटों की दरियागंज या पहाड़ी धीरज का 'चौधरी' का जिक्र तक नहीं होता। मुबंई कर अपनी मुबंई को 'आम्ची मुबंई' को कहकर गर्वित होते हैं और इस मसले पर वे कही तक चले जाते हैं। हमने कभी भी दिल्ली को 'अपनी दिल्ली' समझकर अपनाया नहीं। जाट का स्वभाव है कि वह देर से सचेत होता है। 55 इंच की छाती वाले जाटों ने दिल्ली के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है फिर वे अपने घर में बेगानों यानी 'मुहाजिर' क्यों बन गये? एक अध्ययन "Social Engagement of the Jats" से यह निष्कर्स निकला है– 'Its not big that eat the small] it's the fast that eat the slow. And Jat is a slow race." इतिहास यही बयान करता है। इसलिए मैंने दिल्लू जाट की दिल्ली के भूत को खखांला था। हमें अब अपनी जड़ (History), जमीन (Land) और संस्कृति से जुड़ाव ही नहीं बल्कि गहरा जुड़ाव होना चाहिये वरना Jat Land में जाटों का अस्तित्व खतरे में भी पड़ जायेगा। सावधान होने के लिए अलार्म? स्पष्ट बता दूं मैं– 'जाट न कुरूक्षेत्र में हारे, न तारावड़ी में, न पानीपत में न लालकिले पर, दिल्ली में जाट हारे हैं तो रायसीना हिल, नई दिल्ली (की साजिश) में।'

'India calling' नामक पुस्तक आनंद गिरधरदास की एक ऐतिहासिक विश्लेषण पर आधारित है। उसमें दिल्ली से सटे लोगों (जाट समुदाय) के लिए मैकाले की विनाशकारी नीति पर टिप्पणी है जो 1840–60 के काल के संदर्भ मे है। यहां पर ग्रामीण दिल्ली वालों की भावी पीढ़ी को Macaulay's children कहा गया है। मैकाले ने 1857 संग्राम में जाटों की सक्रियता से दुखी होकर एक नीति की बिसात बिछा दी थी जिसका उद्देश्य था– Generation (of Jats) yet unborn will earn their living in corner shops, मैकाले ने 1830–40 के दशक में एक दीर्घकालीन बहुउद्देश्य योजना तैयार की थी, जिसमें उसने परिभाषित किया था– जब मुस्लिम शासकों ने भारत पर 700–800 बरस राज किया तो हमें 1000 बरस तक राज करने में कोई दिक्कत नहीं होगी। पर दिल्ली

अपने को संकट में डाल कर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं। – जवाहरलाल नेहरू

से सटे किसानों ने उनके इस सपनों को 1857 की जनक्रांति द्वारा चकनाचूर कर दिया। इसके पश्चात अंग्रेजों ने दिल्ली के ईर्द–गिर्द बसे किसानों विशेषकर जाटों के वजूद को मलियामेट करने की योजना क्रियान्वित की। इस योजना के तहत दिल्ली क्षेत्र के Demographic profile का बदलना, किसानों की जमीन का अधिग्रहण करना तथा उन्हें आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से तबाह करना था। इसके साथ–साथ उन्हें मजबूरन अपनी राजधानी कलकत्ता से दिल्ली बदलने के लिए भी काम शुरू कर दिया। मकसद यही था कि जाट किसी भी तरह से दिल्ली के आसपास अपना सिर न उठा सकें।

अंग्रेजों को समझ आ गयी थी जाटों का जमीन से बहुत ज्यादा लगाव है। अतएव उन्होंने जाटों को जमीन से बेदखल करने हेतु अपने राजस्व विभाग को सक्रिय कर दिया। उन्होंने भू–प्रबंधन घटिया नक्शो हस्तलिखित भू–रिकार्ड व खसरा–खतौनी में लपेट दिया जो कानूनी विवादों व भ्रष्टाचार की जड़ और हाकिम, कोर्ट कचहरी व वकीलों का गोल–गोल खिलौना बन गया। जिस तरफ चाहो उसी तरफ घुमालो। इसके साथ–साथ अंग्रेजों ने भू–अधिग्रहण प्रक्रिया के लिए 1882 कानून के तहत रजिस्ट्री व्यवस्था तथा भू–अधिग्रहण कानून–1884 की दोहरी व्यवस्था लागू करके किसान को अधमरा करने का प्रभावी तंत्र बना दिया। इसके अतिरिक्त लैंड एलिनेशन एक्ट तो किसानों के लिए सबसे घातक बनकर आया। जिसके द्वारा सूदखोरों, महाजनों व वकीलों ने किसानों की लाखों एकड़ जमीन छीन ली। जमीनों के मामले में कानूनों का अंधेरा चरम मुकदमेबाजी और कीर्तिमानी भ्रष्टाचार ने किसानों को खूब निचौड़ा और किसान अपाहिज की जिंदगी जीता रहा। पंजाब में जब सन् 1937 में चौ. छोटूराम की जमींदार पार्टी की सरकार बनी तो उन्होंने इन कानूनो को बदलकर किसान को राहत दी थी।

देश सन् 1947 में आजाद हुआ। परंतु भू–प्रबंधन और राजस्व विभाग ब्रतानी ढ़र्रे चलते रहे। इसके अतिरिक्त भू–उपयोग वर्गीकरण एक्ट–1950 जो आजकल C.L.U. के नाम से सुर्खियों में है। पटवारी, बाबू और नेताओं के लिए भ्रष्टाचार का एक प्रभावी औजार बनकर सामने आया और किसानों को मसलने का नया तरीका ईजाद हो गया। आजादी के बाद एक अजीब सी लीला खेली गयी। दिल्ली में तंत्रगण को दलता रहा और जिसके पास जमीने थी, वे भूमिहीन हो गये और जो भूमिहीन थे वे फार्म हाऊसों के मालिक हो गये। आज गणतंत्र श्मसान में प्रेतनृत्य जैसा हो गया है और किसान अपनी रोजी रोटी के धंधे से वंचित होकर कामधंधे की तलाश में मारा मारा फिर रहा है। यह तो वही हुआ जो मैकाले चाहते थे। दिल्ली के तंत्र ने किसान को इतना दला कि अब उसके पास देने के लिए कुछ नहीं बचा। इतने भारी भरकम तंत्र ने दिल्ली देहात (यदि कुछ बचा है तो) के मन में डर पैदा कर दिया है कि वह यह कहने में सिसकता है कि वह दिल्ली वाला है। हां बाहर से आया 25 गज के मकान का मालिक ताल ठोककर कहता है– 'दिल्ली हमारी है।' असहाय मूल दिल्लीवासी तो यी पूछता रहता है– कहां गया वह भाग्य विधाता! क्या इस गणतंत्र के हम जनक नहीं थे?

अब दिल्ली में समझो जाटों से जमीन छिन गई, एनसीआर की तरफ राजतंत्र की नजरे पैनी हो गई है। सरकार की दलील है कि तेजी से आर्थिक विकास लाने के लिए आने वाले वर्षो में बहुत बड़ी मात्रा में भू–संसाधन चाहिये। 2030 तक देश की 41 फीसदी आबादी शहरों में रहेगी। हमने अपने सबसे कीमती संसाधन यानी जमीन को कभी कायदे से नहीं संभाला। इसलिए भू–संसाध की दुर्व्यवस्था रिकार्ड तोड़ है। अब भारत जमीन के मुकदमों का महासागर है और इस महासागर में किसानों को डूबोकर खत्म कर दिया जा रहा है। करीब 11 लाख एकड़ जमीन मुकदमों (सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च कोच्चि का अध्ययन) में उलझी है। तभी भारत के भू–प्रशासन मुकदमें सालाना 70 करोड़ डालर की रिश्वत (ट्रांसपेरंसी इंटरनेशनल रिपोर्ट) बटोरते हैं। पिछले एक दशक में जाटलैंड में निजी निवेशकों की सबसे बड़ी मात्रा में जमीने सरकारी एंजेसियों के जरिये मिली हैं। किसान बिलखते रहे और विकास के तर्क के सहारे सरकार निजी निवेशकों के लिए प्रापर्टी डीलर बन गई। इस प्रक्रिया में 1947–2004 तक तकरीबन करोड़ से ज्यादा जाट विस्थापित हो चुके हैं। आंकड़ा डरावना है पर हमें न अनुभव होता न दिखता है।

भारत का भूमि–अधिग्रहण कानून किसानों के गले का फंदा बन गया है। विदेशों में जमीन लेते समय किसान हित सर्वोपरी होता है। दक्षिण अफ्रीका व पोलैंड ने अधिक से अधिक किसानों को मुआवजा देने की कानूनी शक्ल दे रखी है। जबकि ब्रिटेन व कॉमनवेल्थ देश (भारत को छोड़कर) संपत्ति के साथ किसान जीविका का मुआवजा भी दे रही है। अगले आने वाले सालों में जाटलैंड में भू–अधिग्रहण प्रक्रिया अति बर्बर एवं घातक होने जा रही है। हरियाणा से इसके संकेत आ रहे है। अब प्रदेश के किसानों की 60 हजार एकड़ जमीन ओन–पोन दाम पर छीनी जा चुकी है।

भारत को 41 फीसदी शहरी बनाने के लिए 16,700 वर्ग मीटर क्षेत्र चाहिये जो लगभग 12 नई दिल्ली के समान शहरीकरण की निःसंदेह सबसे बड़ी मार जाटलैंड पर हैं स जाटलैंड के जाटों का अस्तित्व भविष्य में खतरे में पड़ने वाला है। 12 नई दिल्ली यानी नई दिल्ली–II नई दिल्ली–III, नई दिल्ली IV, नई दिल्ली–ग्प्प से हरियाणा, पश्चिमी उत्तरी राजस्थान और दिल्ली राज्यों का Demographic बदल जायेगा। जो गोरे अंग्रेजों ने सोचा था और वे न कर पाऐ उसे काले अंग्रेज कर देंगे। यही 1857 की जनक्रांति के अंग्रेजों की जाटों को हाशिये में लाने की Fatal Policy थी। 21वीं सदी में यह पॉलिसी साकार होने जा रही है। यह मेरे लिये कुछ समय से चिंता का विषय बना हुआ है। इसे मैं Jat Crisis मानता हूं। जब इस विषय पर मैंने स्टैनफोर्ट विश्वविद्यालय, यूएसए में समाजशास्त्र के एक प्रोफेसर से विचार विमर्श किया तो उनकी सटीक टिप्पणी थी– 'जो कौम अपने इतिहास को सुरक्षित नहीं रख सकती, भला वह स्वयं को कैसे सुरक्षित रख पायेगी' और उन्होंने आगे यह कहा– Log on the histories of U.S.A, Russia, China and India- The Great Nations of today's world, the farmers roles for liberty were parmount. But for India, all countries acknoeledge this fact in their histories, but why not India?

लोह-पुरुष चौ. चरण सिहं तपे तपाये राजनेता, कुशल प्रशासक, अर्थशास्त्र के मौलिक विचारक किसान-कामगर, दलित-शोसित-मजलूम, अल्पसंख्यक एवं गाँव गरीबों के महान मसीहा थे।

– प्रोफेसर डॉ० दुर्गपाल सिंह सोलंकी

आगरा : "किसान–क्रान्ति के जनक एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व० चौ० चरण सिहं सादगी और भोलेपन की प्रतिमूर्ति ग्राम वापसी भारत माता के लाडले सपूत एक महा मानव थे। वह एक ऐसा समूचा दर्शन थे जिन्होंने देश को कृषि पर आधारित विकास को नई दिशा दी। दलितों, पिछड़ों व अल्पसंख्यकों को मंच पर लाकर उन्होंने नई राजनैतिक चेतना प्रदान की। देश की ग्रामीण जनता व किसानों को ऐसी वाणी दी कि उनकी आवाज भी दिल्ली तक पहुंची और हर राजनेता तथा हर राजनैतिक दल किसान की भाषा बोलने लगे। उनका आराध्य भी किसान था और आराधक भी किसान था। उनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन का मूलमंत्र था कि हिन्दुस्तान की समृद्धि का रास्ता गावं और खेतों से होकर गुजरता है। आषाढ़ की पक्की फुहारों के संसर्ग से जेठ मास की तपी माटी से निकली सीधी सुगन्ध चौधरी साहब की सबसे अधिक मन भावन खुशी थी, किसानों को युगों–युगों तक अपने खेतों की खड़ी फसलों में उनकी छिपी मुस्कराहट दिखाई देती रहेगी।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह की पुण्य तिथि पर सम्पन्न समारोह एवं विचार–संगोष्ठी में शिक्षाविद एवं चौधरी चरण सिंह के संवैधानिक सलाहकार एवं सहयोगी रहे अखिल भारतीय चौधरी चरण सिंह किसान क्रान्ति के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने मुख्य वक्ता के रुप में व्यक्त किए।

प्रोफेसर डॉ० दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने कहा कि चौधरी चरण सिंह उन महापुरुषों में से हैं, जिन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे हिन्दुस्तान के प्रमुख तपेतपाये लोकप्रिय राजनेता थे। देश के स्वतंत्रता संग्राम में उनका उल्लखनीय योगदान रहा है। वे अर्थशास्त्र के महान विचारक व भौतिक चिन्तक थे। ग्राम्य, कृषि तथा सहकारिता के क्षेत्र में उन्होंने शक्तिशाली प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु की अदूरदर्शी नीतियों का स्पष्ट विरोध किया। देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होकर राष्ट्र निमार्ण के लिए अथक रचनात्मक प्रयत्न किए।चाहे सता में हो या विरोध दल में देश का किसान कामगार चौधरी साहब का नाम सुनकर उनकी सभाओं में खींचा चला आता था। निहित स्वार्थों को एक सही चेतावनी थे। उनके विचारों में अपूर्व दृढ़ता थी और जो कहते थे वो कर दिखाते थे। प्रो० सोलंकी ने चौधरी चरण सिंह के साथ प्रसंगों की चर्चा करते हुए उनकी भावभीनी श्रद्धांजलि में कहा कि वह आज हमारे बीच नहीं रहे हैं लेकिन हमारे पास उनके विचार हैं। हमें उनके बताए रास्ते पर चलना होगा क्योंकि उनके विचार, नीतियां तथा कार्यक्रम वर्तमान में सार्थक, व्यवहारिक एवं प्रासंगिक हैं।

समारोह के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय ग्राम परिषद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं स्वतंत्रता सैनानी डॉ० तेज सिंह वर्मा ने कहा कि हिन्दुस्तान की राजनिति में जो लोग नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहे उनमें चौधरी चरण सिंह का नाम अग्रिम पंक्ति में आता है। जहां मुद्दों और अनुशासन की बात आती थी तो वे वज्र से कठोर थे, वहीं मानवीय दुःख–दर्द के लिए अति कुसुम से कोमल थे। वे यथार्थ दृष्टा थे, तो स्वप्नजीवी भी थे। वे देश के गिने–चुने उन विचारकों में से एक थे, जो लोकहित के साथ प्रतिबद्ध अपने विचार और दर्शन को मूर्तरुप देने की प्रबल आकांक्षा तथा व्यवहारिक कौशल से सम्पन्न थे। तेज सिंह वर्मा ने आहवान करते हुए कहा कि वास्तव में यदि हमें चौधरी चरण सिंह के आदर्शों व स्वप्नों का भारत बनाना है तो देश से रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या का समाधान, देश की एकता और अखण्डता को सुरक्षित करना और शिक्षा का स्तर बढ़ाना होगा। डॉ० वर्मा ने कहा कि चौधरी साहब आम आदमी की खुशहाली के समर्थक थे। वे सादगी की मिशाल थे। मन्त्री से लेकर प्रधानमत्री तक का पद संभाला लेकिन किसान और गरीब से कभी दूर नहीं रहे। वरिष्ठ शिक्षाविद डा० सुधा सिहं ने कहा कि चौधरी चरण सिंह किसान, मजदूरों व कामगरों के मसीहा थे। वे पिछड़े, दलित, शोशित अल्पसंख्यक तथा सर्वहार वर्ग के रहनुमा थे। इस्तीफा तो हमेशा उनकी जेब में लिख रखा रहता था। चौधरी साहब ने भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत किए। उनके मुख्य मंत्रित्व काल में भ्रष्ट अधिकार या तो इस्तीफा देकर चले गये या फिर लम्बे अवकाश पर।

किशोरीरमण पोस्ट गैजुएट मथुरा के राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ० सुधीर प्रताप सोलंकी ने कहा कि चौधरी चरण सिंह आधुनिक भारत के निर्माता व जननायक थे। वर्तमान सरकारें यदि चौधरी साहब की नीतियों का अनुसरण करें तो देश की तस्वीर बदल जाएगी। डॉ.सुधीर प्रताप ने कहा कि आज गरीबों की आवाज उठाने वाले अनेक नेता हैं, जो उनके नाम पर राजनीति कर रहें हैं, लेकिन वो केवल भाषण द्वारा जनता के प्रति कोरी हमदर्दी प्रदर्शित करने के सिवाय व्यवहारिक पक्ष के लिहाज से शून्य है। राजा महेन्द्र प्रताप मिशन, वृन्दावन के महासचिव राजेन्द्र प्रताप सिंह का जीवन, उनका देशप्रेम व जज्बा, उनकी ईमानदारी एक मिसाल है। हमें उनकी खूबियों से प्रेरणा लेनी है। हमें गोरव व गर्व है कि ऐसे महापुरुष ने भारत भूमी में जन्म लिया।वे सच्चे अर्थों में ग्रामीण भारत के प्रतिनिधि प्रवक्ता की जीती–जागती तस्वीर थे। भाव में, भाषा में, वेशभूषा में, भोजन में चौधरी साहब वास्तविक–असली भरत की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। शिक्षाविद वीरपाल सिंह के मतानुसार, चौधरी चरण सिंह हिन्दुस्तान के बहुमुखी अस्तित्व के धनी राजनेता थे।उनका महान व्यक्तित्व था। उनकी स्पष्टवादिता, सादगी, प्रतिबद्धता और प्रमाणिकता की जो छाप है, वह राजनैतिक कार्यकर्ता के लिए दीप स्तम्भ है। गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन के आचार्य सोहन लाल जी ने कहा चौधरी चरण सिंह ने कुटीर और ग्रामीण लघु उद्योगों के विस्तार पर बल इते हुए प्राकृतिक संसाधनों को स्वदेशी तकनीक से उपायों के लिए आहवान किया। वे मशीनीकरण के विरोधी नहीं थे, लेकिन मान्यता

थी कि जो कार्य हाथों से हो, उसके लिए मशीनों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए इससे बेरोजगारों को काम मिलेगा। विद्यार्थी कल्याण सभा के चौधरी चरण सिंह ने पिछड़ी जातियों और किसानों को राजनीति ओर सता में सक्रिय भागीदारी से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। चौधरी साहब ने महान क्रांतिकारी राजा महेन्द्र प्रताप से प्रेरणा ली और सरदार पटेल ने उन्हें अनुप्राणित किया।

प्रो० अरुण प्रताप सिंह ने कहा कि चौ० चरण सिंह कृषि और उद्योगों को एक दूसरे का पूरक मानते थे। उन्होंने उतर प्रदेश में जमींदारी उन्नमूलन और भूमि सुधार के ऐतिहासिक कानूनों को लागू किया।

महिला प्रकोष्ट की अध्यक्ष श्रीमती विमलेश कुमारी ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का सारा जीवन गाँधीवादी विचारधारा के अनुरुप थां कुशल राजनीतिज्ञ के साथ–साथ वे एक अच्छे प्रशासक थे। वे हमेशा जातिवाद के हितैषी थे। उनकी ईमानदारी पर विरोध भी उंगली नहीं उठा पाये। समारोह के अध्यक्ष डॉ० श्री कृष्णा त्रिपाठी ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का विश्वास था, भारत मौलिक रुप से गांवों में बसता है। यदि ग्रामीण व किसान खुशहाल होगा, अधिक कमायेगा तो अधिक खर्च भी करेगा और उसका लाभ शहरियों, दुकानदारों एवं व्यापीरयों को होगा। सभी वक्ताओं ने चौधरी चरण सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वाधीनता संग्राम सैनानी माता श्रीमति दुर्गेश कुमारी ने दीप प्रज्जवलित कर तथा धीरेन्द्र प्रताप ने चौधरी साहब के चित्र पर माल्यापर्ण कर समारोह का शुभारभ किया अक्कू सोलंकी ने आभार एवं धन्यवाद अर्पित किया।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

ओ०पी० सचदेवा

प्रश्न : नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

उत्तर : 23 जनवरी सन् 1897 ई० को उड़ीसा प्रान्त के कटक जिले के काहलिया नामक ग्राम में हुआ था।

प्रश्न : नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के माता–पिता का नाम क्या था ?

उत्तर : माता का नाम प्रभावती और पिता का नाम जानकी नाथ वसु था।

प्रश्न : इनकी माता किस की भक्त थी ?

उत्तर : रामकृष्ण परम हंस की भक्त थी।

प्रश्न : सुभाष चन्द्र बोस पर उनकी माता का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर : माता के धार्मिक विचारों की अमिट छाप बालक सुभाष पर पड़ी। जैसे शिवाजी जी को महान बनाने का श्रेय जीजाबाई का है। उसी प्रकार नेता जी को महान बनाने का श्रेय उनकी माता का है। ऋषि, मुनियों तथा क्रान्तिकारियों की कथा सुनाकर उनमें व्यायाम व बलिदान की भावना भरती थी। माता के प्रयास का ही सुपरिणाम था कि नेता जी का अधिकांश जीवन बलिदान व राष्ट्र के लिए समर्पित रहा।

प्रश्न : नेताजी के पिता क्या कार्य करते थे ?

उत्तर : सरकारी वकील थे।

प्रश्न : नेताजी के पिता के क्या अरमान थे ?

उत्तर : असल बात यह थी कि पढ़े लिखे भारतीयों के सामने यह भावना घर कर चुकी थी कि अंग्रेज भारतीयों से हर दृष्टि में श्रेष्ठ हैं। इसी भावना से जानकी नाथ वसु ने अपने पुत्र सुभाष बाबू अंग्रेजी रहन–सहन, वेशभूषा, आचार–विचारों को अपनायें तथा इंग्लैंड में जाकर उच्च शिक्षा पाकर उच्च अधिकारी बनें।

प्रश्न : नेता जी प्रारम्भिक शिक्षा का वृतांत लिखो।

उत्तर : पांच वर्ष की आयु में नेताजी को मिशनरी स्कूल में भर्ती किया गया। ग्यारह वर्ष की आयु में रवेनसा कॉलेज में प्रवेश कराया। कॉलेज में पढ़ते–पढ़ते इनको एक सदगुरू बैनीराम माधव की संगत मिली। बैनी राम ने सुभाष को अपना परम शिष्य बना लिया।

प्रश्न : स्वामी दयानन्द के किस कथन को मानकर नेताजी ने ब्रह्माचारी रहने का व्रत लिया ?

उत्तर : जिसको विद्या, धर्म, परोपकार और देश सेवा कार्य करना है वह ब्रह्माचारी रहें। स्वामी दयानन्द के इन वचनों को क्रियान्वित कर अपने जीवन को अमर कर लिया।

प्रश्न : नेताजी सुभाष ने आजीवन ब्रह्माचारी रहने का अन्तिम रूप किसके विचारों से दिया ?

उत्तर : डॉ० सुरेश बनर्जी ने मिर्जपुर स्ट्रीट के एक आश्रम की स्थापना की। वे ऐसे युवकों की खोज कर रहे थे जो आजन्म ब्रह्मचारी रहकर देश को स्वतंत्रता दिलाने में जीवन लगाएं। नवयुवक सुभाष और उनके बड़े भाई शरतचन्द ने सहर्ष अपना नाम इस पवित्र कार्य में लिखा दिया।

प्रश्न : सुभाष चन्द्र ने गृहत्याग के बाद क्या बनने का मन बनाया ?

उत्तर : साधू (सन्यासी)।

प्रश्न : साधू जीवन से इन्हें क्यों घृणा हो गई ?

उत्तर : अपनी पिपास शान्त करके के लिए नेताज़ी ने साधू बनने का मन बनाया। किन्तु साधुओं को इसके विपरीत गांजा, भांग,चरस, सुल्फा व अन्य दुष्कर्मों में. लिप्त पाकर इनको साधू जीवन से घृणा हो गयी और घर लौट आये।

प्रश्न : रवनेसा स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद नेताजी कहां पढ़े ?

उत्तर : कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में पढ़ना प्रारम्भ किया।

प्रश्न : नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने प्रोफेसर ओटन के गाल पर चाँटा क्यों मार दिया ?

उत्तर : प्रेसीडेन्सी कॉलेज के एक अंग्रजी प्रोफेसर ओटन साहब बात बात. पर भारतीयों का अपमान करते थे। अन्य विद्यार्थी इस अपमान को सहन कर लेते थे, एक दिन उन्होंने "यू ब्लैक मंकी, यू ब्लैक

मनुष्य की बुराइयां दीर्गजीवी और अच्छाईयां अल्पायु होती हैं। –शेक्सपीयर

इंडियन डॉग" कह दिया। नवयुवक सुभाष ने ऐसा कहने से ओटन से मना किया ओटन गुस्सा में लाल हो गया और दो–चार अंपशब्द और कहे भारत माता के सच्चे सपूत सुभाष खड़े हुए। भारत माता के इस अपमान का बदला लेने के लिए प्रोफेसर ओटन के गाल पर ऐसा तमाचा मारा कि पांचों उंगलिया उसके गाल पर छप गयी और उसे दिन में चाँद तारे दिखाई देने लगे। इस घटना से इनको कॉलेज से निष्कासित कर दिया परन्तु कुछ दिनों बाद आशुतोष मुखर्जी के प्रिंसीपल को समझाने पर पुनः भर्ती कर लिया गया और इसी कॉलेज से इन्होंने 1919 ई० में बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की।

प्रश्न : नेताजी सुभाष बाबू के पिता की इनके प्रति क्या इच्छा थी?

उत्तर : इनका पूरा परिवार अंग्रेजी शिक्षा का प्रबल समर्थक था। इनके पिता चाहते थे कि उनका पुत्र इंग्लैंड जाकर आई०सी०एस० वर्तमान में आई०ए०एस० की ˙ परीक्षा उत्तीर्ण करके कमीश्नर जैसे उच्च पदों पर पदासीन हो।लेकिन सुभाष इन विचारों से सहमत नहीं थे। उन्होंने एक दिन कह ही दिया कि मैं क्रूर अंग्रजो की नौकरी नहीं करुँगा। मैं अपने आपको देश सेवा में लगाना चाहता हूँ। आखिरकार उनके पिता ने कहा कि सुभाष तुम आई०सी०एस०की परिक्षा उत्तीर्ण मेरे नाम के लिए करो, नौकरी करना या न करना वह आपके उपर निर्भर करेगा। 15 सितम्बर 1919 ई० को वह विलायत गये। आपने कठिन परिश्रम करके कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से 1921 ई०में आई० सी०एस० की परिक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। अधिकारियों के आग्रह को ठुकरा कर डिग्री नहीं ली पिताजी की अभिलाषा को पूरी करने के लिए यह परीक्षा उत्तीर्ण की और खाली हाथ घर लौट आंये।

प्रश्न : इंग्लैण्ड से लौटकर सुभाष ने क्या किया ?

उत्तर :सन 1921 ई० को लन्दन से लौटने पर भारत में अंग्रेजो व उनकी अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार हो रहा था। सरकारी स्कूलों के स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालय खोले जा रहे थे। उन दिनों चितरंजन दास कांग्रेस के बड़े लीडरों में आते थे। उन्होंने सुभाष बाबू को अपने नेशनल कॉलेज का प्रधानाचार्य बना दिया। इसके साथ–साथ देशबन्धू के साथ मिलकर देश की आजादी के लिए कार्य करने लगे।

हिन्दू राष्ट्रवाद क्यों और किसके लिए?

– डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार

आजकल राष्ट्रभक्ति की बडी उद्दाम लहरें भारत वर्ष की राजनीति में उठ रही हैं। देशभक्ति अब एक शगल ही बन गया है। आश्चर्य की बात यह है कि जिन लोगों या उनके पूज्य पूर्वजों या विचारकों ने स्वयं स्वतंत्रता–संग्राम में कोई सक्रिय सहकार नहीं किया था; वही साम्प्रदायिक सोच–समझ वाले लोग आजकल सबसे बढ़कर राष्ट्रवादी और देशभक्त बन रहे हैं? ऐसे लोग हिन्दू–राष्ट्र की साम्प्रदायिक अवधारणा को ही न जाने क्यों एकमात्र राष्ट्रवाद मान बैठते हैं। जबकि राष्ट्र में तो सभी धर्मो व जातियों और भाषाओं वाले लोग हिल–मिलकर प्रेम–पूर्वक ही रहते हैं। यह हम नहीं कह रहे हैं, अपितु सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों के लिए परम प्रमाण वेद–भगवान् ही स्वयं उद्घोष करते हैं–

''धर्माणं नाना बहुधा विवाचसम्।
जनं विभ्रति पृथिवि यथौकसम्!!
(पृथिवि सूक्त, अर्थववेद)

''अर्थात् जिस प्रकार से एक परिवार में नाना भाषाभाषी मत–पंथ और विचार वाले लोग एकसाथ निवास करते हैं; देश या राष्ट्र में भी ऐसे ही बहुत–से जन या अभिजन(कबीले) नित्यप्रति प्यार–प्रीत के साथ रहते हैं।''

कहने का भाव यह है कि किसी वेद–शास्त्र या पुराण जैसे किसी भी पवित्र धर्मग्रन्थ तक में जब हिन्दू राष्ट्रवाद का नीति–निर्देश नहीं है तो ये हमारे मिथ्या धर्मध्वजी ढोंगी–पाखण्ड़ी लोग क्यों अहनिर्श व्यर्थ ही हिन्दू–राष्ट्रवाद या धर्म–राष्ट्र का अनर्गल आलाप अनवरत करते रहते हैं। पहली बात तो हिन्दू शब्द ही भारत में लगभग आठवीं शताब्दी से पूर्व नहीं मिलता है। यह भी अरब–आक्रमणकारियों द्वारा हिकारत के साथ हमें दिया गया था।

जिसको हम आज गर्व से कहो कि हिन्दू हैं– एक राजनीतिक नारे के रूप में ढोये चले जा रहे हैं। हिन्दू का शाब्दिक अर्थ अरबी–फारसी भाषाओं में भी तो काला, डाकू–चोर और नास्तिक या फिर विधर्मी ही है। तब क्या, हम वास्तव में ऐसे ही हैं? विदेशी आक्रमणकारियों की धर्मान्ध नजर में हम भारतवासी ऐसे रहे होंगें तो कम–से–कम अपनी नजरों में तो हम नीचे न गिरें। हिन्दू शब्दार्थ की तह में तो झांककर तो देखना ही होगा। फिर वैसे भी तो राष्ट्रवाद अठारवीं–उन्नींसवी शताब्दियों की ही तो आधुनिक संकल्पना है। जबकि लोगों की आवाजाही इधर–उधर काफी हो चुकी थी। स्थायी रूप से आबादियाँ आबाद हो चुकी थीं। उन्होंने आत्मरक्षार्थ ही राष्ट्रवाद की अधुनातन अवधारणा का आविष्कार किया था। उदाहरणार्थ इंग्लैंड़ के लोग अमेरिकावासियों को अपने अधीन न रख सकें; अतएव उन्होंने 1776 ई० में अपनी स्वतंत्रता की उद्घोषणा कर दी थी। इसी प्रकार से फ्रांस और जर्मनी(प्रशिया) तथा आस्ट्रिया आदि देशों ने रोमन–साम्राज्य के जुए से मुक्त करके स्वयं को स्वाधीन कर लिया था। पहले एक देश में ही कितने ही कबीले परस्पर में रक्त–रंजित संघर्ष में उलझे रहते थे। इंग्लैंड में ऐंजल व सैक्सन और वेल्सों के बीच में सदियों तक सतत संघर्ष चला था। इसी प्रकार से फ्रांस में गालों और फ्रैंकों एवं आस्ट्रो–गाथों (जाटों) तथा भिसी गाथो (वैनिस के (जाटों) गाथों के मध्य में सदियों तक युद्ध चलता रहा था। तब कहीं शार्लमेन हैमर ने सभी कबीलों को जीतकर उनको ठोक–पीटकर

ही एक राष्ट्र के रूप में खड़ा किया था। यही स्थिति इंग्लैंड की भी रही थी। वहाँ के प्रथम शासक एग्वर्ट ने आठवीं-नौवीं शताब्दियों में जर्मनी और फ्रांस (गाल-देश) से आने वाले सैक्सनों व नार्मनों और वेल्सों का तालमेल ऐंजलों के साथ बिठाकर या उन्हें दास बनाकर ही उस देश का इंग्लैंड नाम दिया था।

राष्ट्रवाद के निर्माण की यह प्रक्रिया भारतवर्ष में तो कहीं और भी अधिक लम्बी चली हे। बौद्ध-काल में ही हमें 16 महाजनपदों के नाम मिल रहे हैं जोकि एक प्रकार से स्वतंत्र राष्ट्र ही तो थे। उसके ही पूर्व वैदिक या उत्तर-वैदिक काल में तो आर्यों के अपने अभिजनों के मध्य में रावी-नदी के तट पर जल-युद्ध हुआ था। जिसमें भरतों या फरगनावासियों (भरतगणों) के विरुद्ध यहाँ पर प्रथम जत्थे में आने वाले पाँचजन्य और उनके सहयोगी अन्य पाँच गणों ने लोहा लिया था। जिनमें अलिने, विषाणी, पक्थ(पठान)ादि भी सम्मिलित थे। आर्यों के प्रथम जत्थे के पांचजन्य या फिर पाँच कृषक(जाट) कबीले थे- यदु, अनु, द्रहयू, पुरु और तुर्वशु। जिनके वंश का ही विस्तार आगे चलकर समग्र भारत-भूमि पर हुआ है। भरतों या फरगनावासियों में अर्न्तभाव होने से महाभारत-युद्ध के पश्चात पुरुजन ही तो कुरुजन बन गये थे। तो बाद में पुरूरवा के अन्य सगे सहोदर की ही गण सन्तति पूरे ही पश्चिमोत्तर भारतवर्ष में फैल गई थी। आजकल हमें आर्यों के मूल अभिजन भरतगण और तितिक्षु या रूसी-तातारों का कहीं अता-पता भी नहीं है। जबकि उन्हीं के नाम पर भारतवर्ष का नामकरण किया गया है; या फिर वह ईरान के ही पुरातन नाम पार्थ का अपभ्रष्ट रूप भारत है। क्योंकि आर्यों का आव्रजन उधर से ही तो इधर कालान्तर में हुआ है।

यह कहना नहीं होगा कि उनके अपने ही प्रथम और दूसरे जत्थे वाले आर्यों के साथ सिर फुटव्वल रही है। तभी तो ईरानी आर्यदेव वरूण ही तो आज तक जैन्दावस्था जैसे धर्मग्रन्थ में अहुमन्दा या असुरमहान् हैं। जिन पाँचजन्यों को असुर तक बताया गया है पुराणो में और ऋग्वेद में भी वही पूर्वे देवा: और उनके अग्रज तथा सगे सहोदर थे या हैं। आज तक भी भारतवर्ष में हम यह संघर्ष सवर्ण द्विजातियों का मध्य-किसान जातियों के साथ देख सकते हैं। जबकि ब्राह्मण व खत्री और जाट-गूर्जर-आभीरादि सभी आर्यरक्त वंशज ही हैं।

और तो क्या रामायण और महाभारत जैसे महान् महाकाव्यों में भी हम सूर्य वंशज या इच्छवाकुओं (ऑक्सस घाटी से आने वालों) का संघर्ष ईरान और इराक से आने वाले चन्द्रवंशियों या सोमवंशी आर्यक्षत्रियों के विरूद्ध देख सकते हैं। चन्द्रवंशी निचक्षु राजा ने सूर्यवंशियों को जीतकर प्रयागराज से पूर्वांचल में धकेल दिया था। उनके शासक अनरण्य को उसने पलायन के लिए बाध्य कर दिया था। इसी प्रकार चन्द्रवंशी तृणविन्दु ने विदिशा और मालवा तक को विजित कर लिया था और इच्छवाकु वंशज क्षत्रियों को पश्चिम-दक्षिण में गुजरात-महाराष्ट्र से भी भी पीछे आन्ध्र प्रदेश में धकेल दिया था।

(8वीं-10वीं शताब्दी) पूर्व मध्यकाल में भी प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के मथ्य में कितने ही रक्त-रंजित संघर्ष उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य में रहे हैं। दक्षिण में वातापी के राष्ट्रकूटों और चालुक्यों ने गुजरात से लेकर पूरे कन्नौज (उ०प्र०) तक को अपने प्रबल पराक्रम से पदाक्रान्त किया था। इसी प्रकार से मध्यकाल 10 से 12वीं शताब्दियों तक चौहानों और प्रतिहारों में रक्त-रंजित संघर्ष हुए तो बाद में पंवार और गहलौत संघर्ष सन्नद्ध रहे। चौहान (राजस्थानी) और गुजराती चालुक्यों में आये दिन तलवारें तनी रहती थीं। इसी प्रकार से मेवाड के राणाओं और मारवाड (जोध पुर) के राठौरों के मध्य में सीमा-विवाद को लेकर ठनी रहती थी। इसी प्रकार से अजमेर के चौहानों को जयपुर के कछवाहे राजपूत फूटी आँखों नहीं सुहाते थे। उत्तर मध्यकाल में यही स्थिति मुगल एवं मराठों और जाटों के त्रिपक्षीय संघर्ष में थी। भारत पर मुगल और मराठों के मध्य में सतत भाव से सत्ता-संघर्ष चलता ही रहता था। जिसमें भरतपुर के शासक ही सन्तुलन-शक्ति या तुला का कार्य किया करते थे। वे जिधर भी झुक जाते थे, युद्ध का पलडा उधर ही झुक जाता था। 1961 में पानीपत के युद्ध का परिणाम हम सबके सामने है।

यहाँ पर यह कहना सर्वथा असंगत और अतार्किक या अप्रासंगिक नहीं होगा कि भारतवर्ष में धर्म और राष्ट्रवाद के नियन्ता निरन्तर ब्राह्मण-पुरोहित ही तो रहे हैं। उनके हिन्दू-धर्म और उनकी वर्ण-व्यवस्था का जिन राजवंशों अथवा शासकों ने प्राणपन से प्रतिपालन किया था, वही उनके लेखे प्रजापालक और धर्मरक्षक या राष्ट्रभक्त थे। यथा, राणा प्रताप सिँह स्वयं अपने राज्य की रक्षार्थ ही तो सम्राट अकबर से संघर्ष-सन्नद्ध थे। हल्दी-घाटी के रणक्षेत्र में उनका सेनापति एक मुस्लिम व्यक्ति-हाकिम सूरखान था तो दिल्ली की शाही सेना का सेनापति एक हिन्दू राजपुत्र राजा मानसिंह था। तथापि ब्राह्मणवादी साहित्यकारों और इतिहासकारों न जाने क्यों उसे हिन्दू धर्म की रक्षा का युद्ध बखाना है। जबकि वह एक सामन्त योद्धा का एक साम्राज्यवादी शहन्शाह के विरूद्ध ही तो संघर्ष था। यही इतिहास-लेखन की साम्प्रदायिक दृष्टि या पद्धति है।

इसी प्रकार मराठा-योद्धा शिवाजी के संघर्ष को न जाने क्योंकर मनुवादी लोगों ने हिन्दू पदपादशाही की रक्षार्थ सतत संघर्ष कहा है। जबकि वे पहले-पहल मुगलों से अस्त्र-शस्त्र और आर्थिक एवं सैन्य-सहाय पाकर ही तो बीजापुर-गोलकुण्डा से लेकर दौलताबाद (औरंगाबाद) तक विस्तृत आदिलशाही सल्तनत के ही विरूद्ध संघर्ष-सन्नद्ध थे। मुगल भी दक्षिणी भारत में उसको अपने साम्राज्य-विस्तार में कटंक समान समझते थे। इसीलिए उन्होंने शिवाजी मराठा से यह उपद्रव कराया गया था। बाद में

औरंगाबाद की आदिलशाही-सल्तनत को जब कमजोर होने पर मुगलों ने उसे स्व साम्राज्य में मिला लिया था था तो स्वतंत्र मराठा-साम्राज्य स्थापन के आंकाक्षी शिवाजी के साथ उनका सत्ता-संघर्ष सहज स्वाभाविक ही था। फिर वह राजनीतिक संघर्ष धर्मयुद्ध कहाँ से हुआ। यदि हम यह मान भी लें कि राणा प्रताप सिंह और मराठा वीर शिवाजी दोनों हिन्दू धर्म की रक्षार्थ संघर्ष कर रहे थे तो वह राष्ट्र की रक्षा का युद्ध कैसे हुआ। दूसरी ओर जो भरतपुर नरेश महाराजा सूरजमल उस धर्मान्ध युग में भी मराठाओं को यह सत्परामर्श दे रहा था कि अब्दाली के साथ युद्ध को बजाय धार्मिक आधार के देशी-विदेशी के आधार पर ही लडा जाये। देखा जावे तो आधुनिक भारत-राष्ट्र का निर्माता तो वही धर्मनिरपेक्ष शासक होना चाहिए था।

अब जरा आधुनिक काल में आ जाइये। यदि 1857 में में हम भारतीय लोग किस प्रकार से प्रथम स्वतंत्रता -संग्राम में विजयी भी हो जाते तो भी यहां पर क्या हम आज की भाँति एक सशस्त्र राष्ट्र खडा कर सकते थे। कदापि नहीं, क्योंकि मुगल और मराठे दोनों ही भारत की दो बडी सामन्तवादी शक्तियाँ थीं। जिनके हित और धार्मिक विचार एक-दूसरे से बेमेल थे। ऐसी स्थिति में उनमें स्थायी रूप से सतत सत्ता-संघर्ष चलता रहता और वही अन्त में धार्मिक और साम्प्रदायिक स्वरूप ग्रहण कर लेता। उन दो बडी शक्तियों के मध्य में राजपूत-जाट और सिख-सामन्त बलि के बकरे ही बनते रहते। मराठे आये दिन उत्तर-भारत में लूटपाट मचाते रहते थे और अन्य हिन्दू नरेशों को भी आपसी संघर्ष में उलझाये रखते थे। जो भी राजपूत राजा उनको खिंडनी कर नहीं देता था; वे उसकी बहन-बेटियों के विवाह तक नहीं होने दिया करते थे। जैसेकि जयपुर नरेश ईश्वरीसिँह के साथ दुर्व्यवहार हुआ था।

'कोपोऽपि देवस्य वरेणतुल्य' की संस्कृत की सूक्ति के आधार पर भला हो उन विदेशी और विधर्मी अंग्रेजों का, जिन्होंने आधुनिक भारतीय राष्ट्र की नींव रखी। एक संविधान ''एक्ट ऑफ इण्डिया 1935'' दे दिया। विधायी निकायों के गठन से जनतांत्रिक संवैधानिक संस्थाओं का विकास हुआ और प्रादेशिक विधान-मण्ड्लों के चुनावों से विधान-सभाओं का गठन हुआ। एक सशक्त भारतीय सैन्य-शक्ति का संगठन किया गया। एक कुशल और सख्त प्रशासन-तंत्र का विस्तार राष्ट्रीय स्तर पर किया गया। नियम-विध ान निर्माण के लिए एक संसद सौंध का निर्माण दिल्ली में किया गया। इस प्रकार से भारतीय संविधान निर्माण की आधार-पीठिका तैयार की गई। रेल-डाक-तार के प्रचलन ने समाज को जहाँ पर गतिशील बनाया तो वहीं पर राष्ट्रीय-एकता को भी तो मजबूत किया गया। एक केन्द्रीय प्रशासन-तंत्र और सैन्य-शक्ति के अध ीन समस्त देशी राजे-रजवाडों को सुसंगठित किया गया था। वरना न जाने यहाँ पर कितने ही भारत-राष्ट्र होते। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात प्रथम प्रधानमंत्री पं० नेहरू जी ने भी रजवाड़ों का खात्मा करके गणतांत्रिक शासन-तंत्र को और भी पातालमूल बना दिया। भू-परिसीमन का नियम-विधान 1952 ई० बनाकर सामन्ती भूमि व्यवस्था की ही इतिश्री करके जागीरदारी प्रथा का समूलोन्मूलन किया। व्यस्कमताधिार से ही यह जनतांत्रिक भारत राष्ट्र एक सशक्त एकीकृत राष्ट्र है।

आज जो लोग धर्म या मत-पंथ के आधार पर राष्ट्रवाद की परिभाषाएँ गढते हैं, वे इसकी एकता के ही तो सबल शत्रु ही हैं। क्योंकि धार्मिक 'मत-पंथ' के आधार पर कहीं राष्ट्रों का निर्माण होता है? यदि ऐसा होता तो लगभग 50 मुस्लिम देश आज एक ही एकीकृत इस्लामी-राष्ट्र के अंग होते। इसी प्रकार ईसाईयों के सभी देश भी एक ही धर्मराष्ट्र के अंगभूत अवयव होते। तब तो जापान-चीन-कोरिया, प्रायद्वीप और वियतनाम और थाईलैंड भी एक बौद्ध धर्मराष्ट्र के रूप में ही संगठित होते। धर्म के आधार पर हमारे और आपके सामने अकेले पाकिस्तान राष्ट्र का निर्माण हुआ, वह भी कब एकीकृत रह सका और तो क्या पंजाबी मुसलमान अपने ही धर्मबंधु बंगाली मुस्लिमों को सहन नहीं कर सके? ध र्मराष्ट्र में यही सब होता है।

यदि भारत में भी दुर्दैव विपाक से कभी धर्मराष्ट्र या हिन्दू राष्ट्र स्थापित भी हो गया तो क्या स्त्रियाँ, दलित और अल्पसंख्यक और श्रमिक शूद्र किसान लोग उसे सहर्ष स्वीकार कर सकेंगें। जिस राम-राज्य रूपी धर्मराज्य में शम्बूक का शिरच्छेद किया गया हो, क्या शूद्र-श्रमिक ऐसी धर्म-व्यवस्था को कभी भूलकर भी अंगीकार करेंगें। तब तो मनुस्मृति का ही धर्म-विधान चलेगा; जिसमें कि उनके शिक्षाधिकार भी प्रतिबंधित ही होंगें। स्त्रियों तक को विद्याध्ययन का अबाध अधिकार उपलब्ध कहाँ होगा। तब स्वतंत्रता व समानता एवं बंधुता तथा न्याय के मानवीय मूलभूत सिद्धान्त दिवास्वप्न ही तो बन रह जाऐंगें।

आजकल धर्म-राष्ट्र या हिन्दू धर्म ध्वजाधारियों ने वैसे ही दलितों और मुस्लिमों का जीना दूभर कर रखा है। कहीं गोतस्करी के नाम पर तो नहीं घुडचढ़ी के नाम पर। इसलिए जो लोग आध ुनिक युग में भी धर्मराष्ट्र राज्य का संस्थापना का दिवास्वप्न संजो रहे हैं, वे दिवान्ध ही हैं। ये भारत राष्ट्र कोई एक दिन की निर्मिति नहीं है। इसके निर्माण में सहस्त्रों वर्षों का सुदीर्घ समय लगा है। यहाँ पर नाना धर्मावलम्बी और भाषाभाषी लोग सदियों से स्नेहपूर्वक रह रहे हैं। जो लोग आज उनके मध्य में मत-मजहब के नाम पर ही अलगाव और विखराव के बीज वो रहे हैं, वहीं देश के सबल शत्रु हैं। और तो क्या, ऐसे ही लोग सत्ता-शीर्ष पर बैठकर भी विष-वमन कर रहे हैं। यदि हमें अपने इस पुरातन और सनातन भारत-राष्ट्र को एक और अखण्ड रखना है तो धर्मराष्ट्र की बात भूलकर भी मुख पर नहीं लानी होगी, क्योंकि वह एक प्रकार सवर्ण राष्ट्रवाद ही तो होगा।

जिसके पास विद्या रूपी नेत्र नहीं है, वह अंधे के समान है। – अज्ञात

सियासी मोहरा बनते किसान संगठनों को एक जुट होने की आवश्यकता

– डॉ. राजाराम त्रिपाठी

उत्तर भारत में एक कहावत मशहूर है–'बहुतै जोगी, मठ उजाड़ा'

यह कहावत भारतीय किसान संगठनो पर सटीक बैठती है। तमाम परिवर्तनों के दौर से गुजरने के बावजूद भारत एक कृषि प्रधान देश ही बना रहा। उदारीकरण के दौर में सेवा क्षेत्र के विस्तार, औद्योगिक विकास के बावजूद देश की बहुसंख्यक आबादी आज भी खेती पर निर्भर है। बावजूद इसके खेती जोखिम और नुकसान वाला पेशा बना हुआ है। अब किसान अपनी आने वाली पीढ़ी को इससे दूर ही रखना चाहता है। ऐसे में बड़ा प्रश्न यही है कि आखिर ऐसे हालात क्यों बने? आजादी से पहले ब्रिटिश सरकार किसानों का शोषण अपना राजस्व भरने तथा अपनी सत्ता को मजबूत बनाए रखने के लिए करती थी। आजादी के बाद देश में तथाकथित किसानों के संगठन बने। शुरूआती दौर में इस ईमानदार कोशिश का परिणाम भी दिखा लेकिन इसका रूवरूप राष्ट्रीय बनने के पहले ही किसान संगठनों की अवधारणा का राजनीतिक दलों द्वारा अपहरण कर लिया गया। स्वतंत्र भारत की यही विडंबना कही जाएगी कि सोना उगलने वाले खेतों पर ऊंची इमारतें बनने लगीं और किसान खेती को छोड़ कर दूसरे पेशे का रूख करने लगे। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने निःसंदेह देश निर्माण की दिशा में काफी कुछ किया लेकिन उनका पूरा ध्यान आधारभूत संरचना के निर्माण पर टिका रहा। बाद में अन्य सरकारें भी उसका ही अनुसरण करती रही। उदारीकरण के बाद सेवा क्षेत्र सहित अन्य कई विकल्प सामने आए और सरकारें उन पर ध्यान देती रहीं। कृषि क्षेत्र के लिए नीतियों, वैश्विक, कृषि प्रतिस्पर्धा, किसानों की सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक सुरक्षा को लेकर केंद्र की सरकारों ने गंभीरता से कोई काम नहीं किया। इस तरह भारतीय कृषि संकट में पड़ गई।

वक्त के साथ जनसंख्या बढ़ी तो जोत संकुचित होती गई लेकिन उत्पादकता लगातार बढ़ती रही। फिर भी खेती की दुश्वारियां कम नहीं हुई। क्या यह 'संकट' कृत्रिम नहीं लगता? कृषि क्षेत्र में नित नए अनुसंधान हुए हैं। संसाधन बढ़े हैं, सिंचाई पहले से बेहतर हुई है लेकिन भारतीय किसान फिर भी 'संकट' में हैं। आखिर क्यों? इसे समझने के लिए हमें अतीत की और देखना होगा। किसानों के सामने आय, सामाजिक सुरक्षा जैसे संकट इसलिए आ रहे हैं क्योंकि आज उनके हितों के समर्थन में आवाज उठाने वाला कोई सर्वमान्य किसान संगठन नहीं है, कुछ स्वंयभू लोग ही किसान नेता बने हुए हैं। उन्हें किसान हितों से अधिक फिक्र अपनी राजनीति चमकाने की होती है। ऐसे में बरबस ही हमें अविभाजित पंजाब के चौ. छोटूराम, बिहार के सहजानंद सरस्वती, राजस्थान के चौ. बलदेव राम मिर्धा, हरियाणा में चौ. देवी लाल, उत्तर प्रदेश के चौ. चरण सिंह, आंध्र प्रदेश के एनजी रंगा की याद आती है। इसी परंपरा में चौ. महेंद्र सिंह टिकैत और शरद जोशी भी आते हैं लेकिन इन्हीं किसान नेताओं के उत्तराधिकारी आज वैसा प्रभाव नहीं छोड़ पाए। चौ. टिकैत के बेटे पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक ही सिमटे हैं। वहीं वीएम सिंह और राजू शेट्टी ने उत्तर तथा दक्षिण के गन्ना किसानों के हितों को लेकर काफी काम किया है लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर किसान नेता के रूप में उनकी स्वीकार्यता अभी नहीं बन पाई। कुछ और क्षेत्रीय स्तर के किसान नेता हैं जिनका कोई विशेष आधार नहीं है। वे किसानों की राजनीति महज अपने आर्थिक लाभ के लिए करते हैं। उनका उदेश्य कृषि में सक्रिय कंपनियों या फिर यूरोपीय देशों से किसानों के हितों के लिए मिलने वाले कोष को हथियाना भर है।

80 के दशक में कैसे चौ. महेंद्र सिंह टिकैत ने नई दिल्ली के लुटियंस इलाके को झकझोर कर सरकार को किसानों के सामने झुकने पर मजबुर कर दिया था। उनके बाद देश में किसी तरह का बड़ा किसान आंदोलन नहीं हुआ। किसान संगठनों के स्वरूप में भी भारी बदलाव आया है। यदि गैर–राजनीतिक किसान संगठनों को गिनने की कोशिश करें तो निराशा ही हाथ लगेगी। राजनीतिक दलों ने अपने वोट बैंक के लिए किसान विंग बना रखी। उनका मकसद किसानों के अधिकारों की बात करने के बजाय किसानों को लामबंद कर अपनी विचारधारा से जोड़कर केवल वोट हासिल करना होता है। भले ही किसान विंग के कार्यकर्ता किसान होते हैं लेकिन वे संबंधित राजनीतिक दल के कार्यकर्ताओं में बंट गए हैं। इन किसान प्रकोष्ठों ने ही किसान आंदोलनों को नुकसान पहुंचाया है। इस बीच कुछ गैर सरकारी संगठन जरूर किसान हितो के लिए आगे आए हैं लेकिन उनकी नीयत कितनी साफ यह कहना अभी कठिन है। बावजूद इसके किसानो की समस्याओं को लेकर ऐसे संगठनों की छत्रछाया में विरोध प्रदर्शन चलते रहते हैं। कुछ मांगे मानी जाती हैं। लेकिन इनका प्रभाव क्षेत्र क्षेत्रीय ही होता है और इससे किसी आमूलचूल परिवर्तन की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती।

वहीं हम 'फिक्की' एवं 'सीआइआइ' जैसे औद्योगिक संगठनों की बात करें तो ये धड़ों में नहीं बंटे हैं। भले ही इनकी राजनीतिक प्रतिबद्धता किसी भी राजनीतिक दल या विचारधारा के साथ क्यों न हो लेकिन वे खुद को इन राजनीतिक दलों को वोट बैंक नहीं बनते देते। सरकारें भी बजट पूर्व इन व्यावसायिक संगठनों के साथ विचार विमर्श कर नीतियां बनाती हैं। किसानों के प्रति सरकारों की सोच भी कैसी है इसका इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि मंदसौर में पांच किसानों की पुलिस फायरिंग में हुई मौत के मामले को लेकर जब कार्यवाई आगे बढ़ी तो सरकारी अमले का कहना था कि इसमें मरने वाला व्यक्ति जींस और टीशर्ट पहने था तो यह किसान नहीं हो सकता। सरकारों की ऐसी सोच न केवल स्तब्ध करती है बल्कि इनसे भविष्य की उम्मीदें भी खंडित होती हैं। वर्ष 2003 में एनएसएसओ की एक अध्ययन रिपोर्ट से पता चला था कि घटती जोत व उपज का लाभकारी मूल्य न मिलने के कारण लगभग 40 प्रतिशत भारतीय किसान दूसरे क्षेत्र को कैरयिर के विकल्प के रूप में देखते हैं। उनमें अब खेती के इलावा दूसरे क्षेत्रों में हाथ आजमाने की आकाक्षाएं हिलोरे मार रही हैं।

जब तक कृषि को समग्र उन्नति के एक अवसर के रूप में नहीं देखा जाता है तब तक इस पर कोई हैरानी नहीं होनी चाहिए कि भूमि अधिग्रहण, उचित फसल बीमा, बैंक कर्ज माफी या नौकरियों में आरक्षण, फसलों के लिए लाभकारी मूल्य जैसे तत्कालीक सुधारों के समर्थन को भी राजनीतिक दलों से किनारा को किसानों कर किसानों के हितों के प्रति प्रतिबद्धता दिखानी ही होगी। तभी वे प्रासंगिक बन पाएंगी। इन किसान आंदोलनों से आज की तारीख में किसानों व उनके हितों को कुछ सहारा तो मिल सकता है लेकिन कारगर और दीर्धकालिन समाधान इनके बस में नहीं।

विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Manglik Girl 27/5'6" M.A. Sociology (Gold Medal list) from PU. Net clear and purshing Ph.D. Father Haryana Government officer, Mother House Wife. Manglik officer Puncofed. Gotra : Gill, Nandal, Barun. Cont.: 9239515119
- SM4 Jat Girl (03.10.1992) 5'5" MSc, CTET, HTET. Gotra : Gahalyan, Chhikara, Bura. Cont.: 9467630182
- SM4 Jat Girl (19-10-89) 5'6" B.Tech, MBA, Project engineer, Gotra: Dabas, Lahore, Khatri, Mob.: 9818579670
- SM4 Jat Girl (23-07-90) 5'3" M.Com,B.Ed, Astt. manager union bank of india, Cont.: 8171948891
- SM4 Jat Girl (16-06-92) 5'0" D.ed (JBT) BA, Warking Satluj public school sec 2 pkl, Gotra: NAIDU,NAIN, Cont.: 9417339842
- SM4 Jat Girl (25-09-88) 5'8" MBBS, MD, Medical Doctor, Gotra: SUHAG, SANGWAN, AHLAWAT. Cont.: 9416896043
- SM4 Jat Girl (9/12/1992) 5'7" MBBS, Doing MS. Gotra: Dhanker, kadion, balhara, Cont.: 9466010011
- SM4 Jat Girl (11/1/1992) 5'3" B.D.S, MBA student.Gotra: Ahlawat, dhankher, gulia, hooda, Cont.: 9417249719
- SM4 Jat Girl (25-08-91) 5'3" B-Tech, UT Secretariat (UDC), Gotra: Kadian, sangwan, ahlawat, Cont.: 9992333202, 8587000000
- SM4 Jat Girl (3/9/1991) 5'5" B.Tech working in Accenture Solutions, Manesar (GGN) Gotra: Bisla, dhillon, malik, mann, chahal, Cont. 9417391563
- SM4 Jat Girl (15-04-93) 5'3" BA, B.ed, CTET, HTET. Gotra: PANGAL , DAHIYA, SANDHU, RATHI, Cont.: 9255431810
- SM4 Jat Girl (24-02-91) 5'4" MCA working in Yes bank, Gotra : Chahal, khubber, gulia, Cont.: 9992500984
- SM4 Jat Girl (30-Jul-92) 5'1" MBA,B Tech, diploma. Gotra: Godara,kundu, Janghu, Cont.: 9728588691
- SM4 Jat Girl (12/8/1988) 5'4", BBA,POST GRADUATE, working as a DUPTY MANGER in YES BANK, Gotra: PHOGAT, MALIK, Cont.: 9358401779, 9997600000
- SM4 Jat Girl (3/2/1990) 5'1" M.COM Gotra: DANGI, DHAMA, Cont.: 9873137917
- SM4 Jat Girl (24-11-90) 5'4" DOING PH.D, Gotra: RATHI, PANJETA, NEHARA, Cont.: 9991098915, 7015000000
- SM4 Jat Girl (4/12/1990) 5'2" MCA Working in MHC at Mohali, Gotra: GULIA, MALHAN, DALAL, Cont.: 9780385939
- SM4 Jat Girl (12/11/1987) 5'3" B.COM, M.COM, B.ed working Teaching at Rohtak, Gotra: Dager, kharab, suhag, Cont.: 99888617961
- SM4 Jat Girl (18-12-90) MA, Gotra: REDHU, PUNIA, BENIWAL, Cont.: 818892668
- SM4 Jat Girl (13-06-94) 5'5" B.SC, M.SC, B.Ed, Gotra: KHOKHAR, DAHIYA, SIWACH, RANDHAWA, Cont.: 9813209733
- SM4 Jat Girl (18-12-89) 5'5" BE in information science, Gotra: SUHAG, RANA, Cont.: 9880788992
- SM4 Jat Girl (14-03-88) 5'6" M.A, B.Ed, Gotra: Inania, Gadhwal, Maila, Pilania, Cont.: 9466178093
- SM4 Jat Girl (12/1/1988) 5'8" M.Phill & M.Sc, Guest Lecturer in college New Delhi, Gotra: Rathi Malik, Cont.: 9654326146
- SM4 Jat Girl (14-09-88) 5'3" LLB, LLM, PHD, Research, Associate in NLU Delhi, Gotra: Sangwan, Gahlian, Cont.: 9810212200
- SM4 Jat Girl (27-01-89) 5'3" B.Tech CSC, Senior Software Engineer, Gotra: Ahlawat, Baliyan, Cont.: 9717638314, 9971993557
- SM4 Jat Girl (09.03.1989) 5'4" BA and PGDCA, working Clerk in Haryana Civil Court, Gotra: Chahal, Sheokand, Dhull, Cont.: 9468407521
- SM4 Jat Girl (29.03.1990) 5'2" M.A. English, B.Ed. Working in Agriculture, Gotra: Kaliraman, Kadian, Punia, Gotra: 8168693593
- SM4 Jat Girl (19.07.1990) 5'4" M.A., M.Phil. PHD. NET, CTET, HTET working Private Instructor, Gotra: Duhan, Sehrawat, Kundu, Cont.: 9416620245
- SM4 Jat Girl (25.11.1992) 5'2" M.Com., Adhoc employee at Haryana Electricity Board, Gotra: Pawar, Dahiya, Pilania, Cont.: 9417723184
- SM4 Jat Girl (18.08.1988) 5'4", M.Sc. Math, B.Ed. M.Ed. working Teacher in Private School, Gotra: Bankura, Maan, Narwal, Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (24.05.1992) 5'6" B.Tech, MBA Manager at Alliances Gurugram, Gotra: Dahiya, Kharab, Khokhar, Cont.: 8729000190
- SM4 Jat Girl (26.07.1995) 5'3" GNM, Post Basic B.Sc. Nursing, Govt. Service, Gotra: Chhikara, Saroha, Malik, Dahiya, Cont.: 9818536146
- SM4 Jat Girl (03.10.1992) 5'5" M.Sc. B.Ed. CTET, HTET, Govt. Service, Gotra: Ghlayan, Chhikara, Bura, Khatkar, Cont.: 9467630182
- SM4 Jat Girl (05.01.1998) 5'6" B.Sc. Non medical, Govt. Service, Gotra: Kaliraman, Panghal,Punia, Sihag, Cont.: 9992394448
- SM4 Jat Girl (05.02.1989) 5'1" B.Com, MBS, LLB, Practice in High Court, Chandigarh, Gotra: Phogat, Tomar, Sangwan, Kadiyan, Cont.: 8929622456
- SM4 Jat Girl (07.01.1991) 5'4" B.A. GNM, Teacher in Private School, Gotra: Bankura, Maan, Narwal, Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (04.09.1990) 5'4" BBA, MBA, PGDM, Gotra: Sunda, Bhadu, Dhaka, Dudi, Cont.: 9417839579
- SM4 Jat Girl (17.09.1995) 5'4" M.Com, B.Ed, Gotra: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull, Cont.: 9468407521
- SM4 Jat Girl (23.07.1990) 4'5" B.Tech. M.Sc. From USA, Software Engineer in USA, Gotra: Sindhu, Malik, Deswal, Gahlawat, Cont.: 9416160789
- SM4 Jat Girl (02.10.1980) 5'4" M.Sc. M.Phil. B.Ed, Junior Lecturer in Haryana Govt., Gotra: Nandal, Sehrawat, Dalal, Cont.: 8059220808
- SM4 Jat Girl (14.03.1988) 5'6", MA Geography, Pol. Sc., B.Ed., Gotra: Inaniya, Gadhwal, Malia, Pilania, Cont.: 9466178093
- SM4 Jat Girl (12.01.1988) 5'8", M.Sc. M.Phil, PHD, Guest Lecturer in Delhi, Gotra: Rathee, Malik, Cont.: 9654326146
- SM4 Jat Girl (14.09.1988) 5'3" LLB, LLM, Ph.D. Research Associate NLU, Delhi, Gotra: Sangwan, Ghalyan, Cont.: 9810212200
- SM4 Jat Girl (27.01.1989) 5'3" B.Tech. Software Engineer in Dell, Noida, Gotra: Ahlawat, Balyan, Cont.: 9717638314
- SM4 Jat Girl (23.03.1991) 5'4" M.Tech. Ph.D, Gotra: Dhillon,
- SM4 Jat Girl (16.06.1993) 5'3" B.Tech. MBA, Working Sr. Engineer in MNC Gurugram, Gotra: Godara, Janghu, Kundu, Cont.: 9728588691
- SM4 Jat Girl (13.02.1994) 5'5" B.A., LLB, Gotra: Sandhu, Ledhra, Mandhan, Cont.: 7888785519
- SM4 Jat Girl (13.10.1991) 5'5" LLM Pursuing Ph.D , Advocate, Gotra: Malik, Deshwal, Sheoran, Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Girl (01.01.1990) 5'3" M.A. Pol.Sc. JBT, HTET, CTET, Net Trainer, Gotra: Beniwal, Bangar, Dhanda, Cont.: 8010277736
- SM4 Jat Girl (03.02.1992) 5'6" B.Tech., Working Analyst at Royal Bank Gurugram, Gotra: Dalal, Malik, Narwal, Cont.: 9810319840
- SM4 Jat Girl (05.02.1989) 5'2" Ph.D., working Physics Assistant Professor, CHD, Gotra: Kaliraman, Dahiya, (Direct Malik), Cont.: 9988336791
- SM4 Jat Girl (03.01.1992) 5'2" M.Sc. Ph.D. NET, Govt. Junior Lecturer, Panipat, Gotra: Khubber, Nain, Sangroya, Cont.: 9466218455
- SM4 Jat Girl (24.02.1991) 5'4" MCA, Gotra: Chahal, Khubber, Gulia (Direct Malik), Cont.: 9992500984
- SM4 Jat Girl (11.12.1991) 5'3" B.Tech. B.ed, working as Teacher in DPS, Gotra: Rangi, Dhanda, Sheokand, Cont.: 9812539001
- SM4 Jat Girl (15.08.1990) 5'2", B.Com. MBA, B.Ed. working Assistant in Axis Bank, Gotra: Rangi, Dhanda, Sheokand, Cont.: 9812539001
- SM4 Jat Girl (17.02.1987) 5'2" BAMS, PG-ENT, MS, Gotra: Nain, Malik, Jaglan, Mor, Cont.: 7876122900
- SM4 Jat Girl (12.10.1992) 5'3' B.Tech., working Service in Ltd. Company, Gotra: Naidoo, Nain, Khatkar, Cont.: 9217126815
- SM4 Jat Girl (27.10.1993) 5'8" M.A., ENG. NET, working DEO, Education, Gotra: Malik, Sangwan, Dahiya, Cont.: 9217884178
- SM4 Jat Girl (23.10.1992) 5'2" B.Tech (Fashion) working Designer in Desa Brand, Gotra: Rajyan, Nandal, Jakhar, Cont.: 9255525278
- SM4 Jat Girl (11.07.1990) 5'3" M.Com. B.Ed., NET HTET AWE, PGT Regular Army Public School, Gotra: Dagshai, Solan, Sihag, Dhatarwal, Dhanda, Cont.: 9478355792
- SM4 Jat Girl (08.01.1990) 5'2' MA Pshycology, working DEO, Gotra: Punia, tewatia, Nobar, Cont.: 8950717580
- SM4 Jat Girl (03.01.1994) 5'3" M.Sc. Physics, Bed. CTET, PTET, Gotra: Mor, Pannu, Malik, (Poonia, Kataria, Nehra, Grewal) Cont.:

दुनिया का अस्तित्व शस्त्र बल पर नहीं, सत्य, दया और आत्मबल पर है। –महात्मा गांधी

9417725528
- SM4 Jat Girl (29.02.1992) 5'4" M.Sc. Physics, B.ed. PTET, Gotra: Dalal, Dagar, Sinhmar, Sindhu, Cont.: 9463330394
- SM4 Jat Girl (15.12.1993) 5'4" M.Sc. Physics, B.Ed CTER, HTET, Private Teacher in Heritage School, Gurugram (Package 5.5 lakh) Gotra: Gulia, Ahlawat, Dabas, Cont.: 9417416977
- SM4 Jat Girl (20.08.1993) 5'6" MA English, working Steno Typist Contract, Haryana Govt., Gotra: Nijarnia, Saharan, Jayani, Cont.: 9463889289
- SM4 Jat Girl (20.08.1992) 5'2" M A, B.Ed., Contract Teacher, Gotra: Nijarnia, Saharan, Jayani, Cont.: 9463889289
- SM4 Jat Girl (02.10.1990) 5'4" M.Pharma, working Pharma Compnay, Baddi, Gotra: Bankura, Dhillon, Antal, Cont.: 9416460624
- SM4 Jat Girl (22.01.1994) 5'1" M.Tech, Gotra: Chhikara, Godara, Nandal (Dhankhar) Cont.: 9434032850
- SM4 Jat Girl (22.02.1991) 5'7" M.Sc. Geography, B.Ed. Gotra: Dalal, Nain, Sheoran (Maan, Deshwal, Sihag), Cont.: 9466752616
- SM4 Jat Girl (07.07.1991) 5'5" BDS, Private Hospital, Bhiwani, Gotra: Phogat, Sahu, Sheoran, Solanki, Cont.: 9416939701
- SM4 Jat Girl (13.06.1993) 5'5" B.Tech, Working in HCL, Gotra: Phogat, Sahu, Sheoran, Solanki, Cont.: 9416939701
- SM4 Jat Girl (24.07.1989) 5'5" B.Com. (Hons), Company Secretary, PGDBA, Masters in Business Law Company Secretary in JCBL (April 2014-June 2018), Working with C.A. Firm, Gotra: Garhwal, Jakhar, Ola, Cont.: 9464741686
- SM4 Jat Girl (14.12.1991) 5'4" M.Sc. Chemistry, B.Ed. Assistant Professor (Contract) Jat College, Gotra: Dhankhar, Saraha, Kadiyan, Cont.: 9466649110, 7888653335
- SM4 Jat Girl (29.09.1991) 5'3" BDS, Pursuing MDS, Gotra: Chhikara, Vijaran, Dagar, Cont.: 9416056222
- SM4 Jat Girl (23.03.1991) 5'3" M.Tech. Pursuing Ph.D. NIT KUK, Gotra: Dhillon, Dhanda, Panghal (Nehra, Dult) Cont.: 8506078700
- SM4 Jat Girl (30.03.1995) 5'1" M.A. Economic PU, B.Ed, Gotra: Sirohi, Dodwal, Cont.: 9870705700
- SM4 Jat Girl (4.6.1993) 5"4', MA Eng, Fashion Designer Diploma, Pvt Business. Gotra: Nehra, Narwal, Rathee, Dhuan, Cont.: 9417046305
- SM4 Jat Girl (19.9.1990) 5'6" B.Tech, MBA, Project Engg. Gotra: Dabas, khatri, Cont.: 9818579670
- SM4 Jat Girl (22.02.1991) 5'7" BA,B.Ed, MSC (Geography) Gotra: Dalal, Nain, Sheoran, Cont.: 9466752616
- SM4 Jat Girl (10.7.1986) 5'3" MA English B.Ed, Teacher Posted Panipat, Gotra: Sheokand, Benwal, Nandal, Cont.: 9729759980
- SM4 Jat Girl (03.06.1976) 5'1" BA & MBA, Service in Gurugram, Gora: Kushal, Kathwalia, Cont.: 9855403488
- SM4 Jat Girl (15.4.1993) 5'3" B.A doing B.Ed CTET and HTET, Gotra: Phangal, Dahiya, Sandhu, Rathee, Cont.: 9991185868
- SM4 Jat Girl (4.10.1996) 5'2" M.Sc food science, Gotra: Nehra, Narwal, Dhuan, Rathee, Cont.: 9417046305
- SM4 Jat Girl (23.7.1988) 5'3" BDS, Gotra: Chahar Nain Binda, Cont.: 7347378494
- SM4 Jat Girl (Dec-88) 5'2" M.A. Economics (Hons). Gotra: Dahiya, Sehrawat, Cont.: 9988224040
- SM4 Jat Girl (15.05.1992) 5'5" M.Sc. Chemistry, B.Ed, working Private Teacher, Gotra: Mor, Dhariwal, Chahal (Poonia, Malik, Kataria, Nehra, Grewal) Cont.: 9416603097
- SM4 Jat Girl (03.01.1995) 5'3" BDS, Practice, Gotra: Gill, Sehrawat, Ahlawat, Cont.: 9466205869
- SM4 Jat Girl (03.03.1996) 5'7" M.A Double, Gotra: Gahlawat, Mann, Sangwan, Lamba, Cont.: 9466016393
- SM4 Jat Girl (03.04.1990) 5'4" ECE B.Tech. MBA, Property Developer and Builder, Gotra: Chahar, Nain, Binda, Cont.: 7347378494
- SM4 Jat Girl (08.12.1994) 5'4" JBT, B.Com, HTECT, CTECT, Gotra: Panghal,Sihag, Kalkanda, Cont.: 9466580807
- SM4 Jat Girl (09.10.1992) 5'4" BBA, M.Com, Gotra: Panghal,Sihag, Kalkanda, Cont.: 9466580807
- SM4 Jat Girl (08.08.1991) 5'6" M.Com, Gotra: Malik, Kaliraman, Saharat, Cont.: 9417187284
- SM4 Jat Girl (13.05.1984) 5'3" M.A, Hindi, Govt. Job. Steno, Gotra: Gadodia, Lamba, Sangwan, Cont.: 9417554756
- SM4 Jat Girl (03.10.92) 5'6" M.Sc Physics from P.U. B.Ed, CTET, HTET cleared, Gotra: Gehlayan, Chhikara, Bura, Khatkar, Cont.: 9467630182
- SM4 Jat Girl (Apr-89) 5'4" MCA from PU, Employed in Pb. & Hr. High Court, Gotra: Sheoran, Punia, Sangwan, Cont.: 9988359360
- SM4 Jat Girl (23.07.1990) 5'5" B.Tech., MS from USA, Working in USA, Gotra: Sandhu, Gehlawat, Malik, Deswal, Cont.: 9416160789

LIST OF JAT BOYS

- SM4 Jat Boy (20.08.1982) 5'9.5" LLM (Criminal Law) LLB (2016) P.U. Master in International Bussiness 2006. University of Greenwich in U.K., Fincial Management Global Strategy & International Marketing. B.A. 2002 in P.U., Relationship Manager HSBC (Dec.-Nov. 2011), Relationship Manager in Braclays Bank (July 2010-Nov. 2010) Assistance Sale Manager in Citi Bank (2008-June 2010) Working in Desbhaghat University as Associate Professor. Gotra: Malik, Punia, Mor, Cont.: 0172-2641127, 9888004417
- SM4 Jat Boy (02.09.1985) 5'8" B.D.S, Self Clinic, Gotra: Deshwal, Dahiya, Mor,, Cont.: 9868092590
- SM4 Jat Boy (27.01.1994) 5'1" M.com Punjab University, working Accountant in HAFED on out sourcing policy, Gotra: Dhaiya, Gill chillar other Chikkara, Cont.: 9812503542
- SM4 Jat Boy (18.12.1994) 5'1" 10+2, N.A, Gotra: Ahalwat, Dhuan, Shuhag other Gulia, Cont.: 8816998315
- SM4 Jat Boy (Aug-89) 5'6" Gardaute N.A, Gotra: Malik, Tawar, pawar, Cont.: 9216777716
- SM4 Jat Boy (16.9.1991) 5'7" M.CA(CS) working Software Engg. (package 4.80) Gotra: Sherawat, Attri, Cont.: 9634363379
- SM4 Jat Boy (08.4.1990) 5'7" PG. D.M (finance) B.Com, working Team Leader Assistant Manager (Accenture Solution Ltd Package 5.50), Gotra: Jaglana, Dahiya, Saroha, Cont.: 9540839373
- SM4 Jat Boy (07.08.1993) 5'8" BVSC and AH, working in Pvt Job. Gotra: Ghalyan, Malik, Bura, Cont.: 8053302264
- SM4 Jat Boy (07.08.1988) 5'1" working in Bachelor in Hotel Management, Captian in (Hotel (Abu Dhabi) Package 8 Lac, Gotra: Punia, Chatthe, Cont.: 9719155600
- SM4 Jat Boy (08.05.1975) 5'9" 10+2, N.A, Gotra: Khatakar, Narwal, goyat, Cont.: 9466778535
- SM4 Jat Boy (20.09.1993) 6' M.Tech, Lecturer, Gotra: Guttian, Khatakar, Cont.: 9416028926
- SM4 Jat Boy (28 Years) 10+2, ITI, Working beyond package 30,000/- Per month, Gotra: Lakhlan, Godra, benewal, Cont.: 8295121819
- SM4 Jat Boy (16.03.1984) 5'3" B.A/B.Ed, Physical Edu teacher, in Private school, Gotra: Tomar, Sangwan, Phogat, Cont.: 8929622456
- SM4 Jat Boy (5.10.1981) 5'7" B.A, Tour & Travel income 60,000/- per month, Gotra: Rathee, Chahal, Hooda, Cont.: 9254822209
- SM4 Jat Boy (21.10.1988) 5'11" Computer Engg. (BE from Jaipur, M.Sc Bostan USA) Computer Engg in Bostan (USA), Gotra: Sangwan, sindhu, Sehoran, Cont.: 9416059988
- SM4 Jat Boy (23.02.1990) 5'5" B.tech Package 10 lac, Gotra: Sindhu, Sirohi
- SM4 Jat Boy (01.06.1990) 5'9" B.Tech, M.Tech, NFL, Bhatinda, Package 7 lac, Gotra: Deshwal, Thanua, Cont.: 9968377670
- SM4 Jat Boy (13.05.1983) 5'6" 10+2 Supervisor, Gotra: Narwal, Khokar, Phogat other Dhull, Cont.: 9991604013
- SM4 Jat Boy (28.10.1991) 5'9" Constable UP Police, Gotra: Nahra, Sangwan, Cont.: 9927384808
- SM4 Jat Boy (5.9.1986) 5'7" B.Tech Bio Medical , M.tech (USA) Self Business, Gotra: Bawariya, Meel, Shiag, Cont.: 9416397613
- SM4 Jat Boy (172 cm) B.sc/B.Ed CCY, Spl BTC, Govt.Teacher (42000 per month), Gotra: Rathee Balyan, Cont.: 9557581553
- SM4 Jat Boy (2.05.1992) 5'11" B.A/B.Ed, C,Tet, P,Tet, Under coaching in CHD, Gotra: Kundu, Dahiya Dalal, Cont.: 9888120102
- SM4 Jat Boy (28.5.1986) 6' B.Tech Electrical, working Pvt Job, Gotra: Dahiya, Kundu Singmar, Deshwal, Cont.: 9466449843
- SM4 Jat Boy (26.06.1991) 5'9" B.Tech civil MDU RTK, Self Business (income 6 lac), Gotra: Nandal, Jakhar, Rajyan, Cont.: 9255525278
- SM4 Jat Boy (15.03.1991) 5'9" B.Tech (CS) MBA, working Software Engg. In Mohali, Gotra: Nain, Bheru, Mor, Cont.: 9996606868
- SM4 Jat Boy (06.02.1991) 5'7" B.Tech (Mechnical) SBI Tomar, Tewatiya, Malik, Cont.: 9466262234
- SM4 Jat Boy (03.04.1992) 5'9" B.Tech (ECE) working Central Excise

हम हमेशा कठिनाई के स्थान पर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं। जबकि कठिनाई से वही निपट लेना श्रेष्ठ होता है। –अज्ञात

Insp. Mumbai Gotra: Rhula, Narwal, Kharata, Cont.: 9466563733
- SM4 Jat Boy (18.06.1989) 5'11" B.Tech. Working in Wipro, Gotra: Kairon, Dhanda, Malik, Cont.: 9813322522
- SM4 Jat Boy (20.07.1992) 5'9" MBA, Finance and Retailer, AG Office HRy DEO, Gotra: Mann, Shuhag, Deshwal, Dalal, Ghlawat, Sangwan, Cont.: 8708472800
- SM4 Jat Boy (18.8.1990) 5'8" B.A, working Bhavik Pvt Ltd Kashwana (Rjs), Gotra: Lamba, Midhar, Jitarwal, Cont.: 9001712090
- SM4 Jat Boy (23.2.1989) B.tech, working ACB Ltd Rajagarh, Gotra: Khara, Sangwan, Deshwal, Cont.: 9416934364
- SM4 Jat Boy (10.6.1989) 5'6" 10th pass, working in Pvt Job, Gotra: Bhar, Dhillon, karwarsara, Cont.: 9812065919
- SM4 Jat Boy (12.10.1990) 5'11" B.A JBT HTET pass, working in Vita Booth, Gotra: Deshwal, Kadiyan, Malik, Cont.: 9992446838
- SM4 Jat Boy (11.8.1990) 5'9" B.tech, working Delhi Creative Group, Gotra: Nashpal, Kaysath, Gotra: 9876024577
- SM4 Jat Boy (3.3.1991) 5'11" B.tech (MC) P.O, IDBI, Gotra: Thelan, Kataria, Kohar, Deshwal, Cont.: 9885506631
- SM4 Jat Boy (17.9.1989) 5'8" B.tech (Elc), working in Project Officer HREDA, Gotra: Mohil, Karwarsara, Bohriya, Lamba, Cont.: 9417250704
- SM4 Jat Boy (10.4.1983) 5'7" BA, JBT, Yoga Teacher, Gotra: Sindhu, Malik Dharwal, Gotra: 8901540222
- SM4 Jat Boy (7.9.1990) 6' B.tech in civil engg., working Custom Officer, Gotra: Poria, Rathee, Singdora, Cont.: 9417069129
- SM4 Jat Boy (10.8.1995) 5'8" 10+2, working Constable UT CHD, Gotra: Mann, Malik ,Sharan, Cont.: 9317958900
- SM4 Jat Boy (8.9.1980) 6'2" 10th, Gotra: Pawar, chahal, Ghangash, Rathee, ahlawat, Cont.: 9317958900
- SM4 Jat Boy (7.8.1992) 5'11" B.Tech, working in Asstt. Manager M&M Sawraj Mohali, Gotra: Rathee, Nain, Malik, Cont.: 9215763372
- SM4 Jat Boy (12.12.1990) 5'9" B.Tech, Working in Maruti Service Center, Gotra: Grewal, Gill, Ahlawat, Cont.: 9316136802
- SM4 Jat Boy (28.11.1989) 6' B.Tech (ECE), working MNC IT Park Chd, Gotra: Malik, Pehal, Nain, chahal, Cont.: 8054461730
- SM4 Jat Boy (6.4.1990) 6' B.Tech (cs), Job in CISF Sub Insp., Gotra: Phogat, Dahaiya, Sheoran (Rathee), Cont.: 7696551999
- SM4 Jat Boy (7.9.1990) 6' B.Tech (in civil), Job in Custom Officer Custom Deptt., Gotra: Poria, Rathee, Singroha (Dhuan,Deshwal, Chahal), Cont.: 9417069129
- SM4 Jat Boy (1.10.1988) 5'6" 10+2, Pvt Job, Gotra: Narwal, Bangar, Chahar, Cont.: 981583427
- SM4 Jat Boy (12.6.1990) 5'11" B.tech, M.tech (Malboran) System Engg. CUBE Co. Malboran, Gotra: Dhull, Kandola, Sheokand, Chahal, Cont.: 9416785631
- SM4 Jat Boy (25.01.1989) 5'10" NDA Major in Army, Gotra: Chhikara, Kohad, Vijaran, Cont.: 9811154643
- SM4 Jat Boy (08.11.1991) 6' B.A., Self Business, Gotra: Pahal, Malik, Sehrawat, Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (25.4.1992) 6'2" B.SC, T.V Artist, Gotra: Dhull, Sangwan, Malik, Cont.: 9466580807
- SM4 Jat Boy (Aug-94) 6'2" B.A. Gotra: Sindhu, Tehlan, Malik, Gehlawat, Cont.: 9872716234
- SM4 Jat Boy (21.08.1987) 5'10" B.Tech, working Software eng. USA, Gotra: Sindhu,Chhilar,Ahlawat, Galawat, Cont.: 9315647254
- SM4 Jat Boy (25.04.1989) 5"11" M.Tech, Job in SDO, Local Govt.Punjab, Gotra: Ahlawat, Malik, Siwach, (Rathi), Cont.: 8146834770
- SM4 Jat Boy (22.12.1981) 5'9" BA, ITI, Business, Gotra: Gadodiya, Lamba, Sangwan, Cont.: 9417554756
- SM4 Jat Boy (16.06.1988) 6"1, M.Com, Business, Gotra: Gadodiya, Lamba, Sangwan, Cont.: 9417554756
- SM4 Jat Boy (03.01.1988) 5'8" MBBS MD, Gotra: Goyt, Ahlawt, Dhankher, Cont.: 9812596313
- SM4 Jat Boy (03.06.91) 5'5" Mechanical Engineer, Gotra: Dhillon, Kalkanda, Sheokand, Cont.: 8901152385
- SM4 Jat Boy (03.06.90) 5'7" B.Tech, MBA, Self Employed, Gotra: Nain, Malik, Cont.: 9876633101

POSTER MAKING COMPETITION ON 22-11-2018

FOR SCHOOL GOING STUDENTS

A Poster Making Competition will be organized by JAT SABHA, CHANDIGARH for school going students on 22nd November, 2018 from 10 to 11 AM in the premises of JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.

The aim of this Competition is to generate creative spirit among the children and polish the existing potential a mong them. To widen the scope of talent search in this field and give incentive to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories as under:-

Category A	Class III to V
Category B	Class VI to VIII
Category C	Class IX to XII

For each category there will be prizes of Rs. 2100/-, Rs. 1500/-, Rs.1100/- and remaning participated schools will given consolation prizes of Rs. 500/-each. The topic of the Poster Competition will be "Childhood today" (आज का बचपन) **or** "Floods in India" (भारत में बाढ़) Duration of the Competition will of one hour. Entries for the Competition may be sent to JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A, CHANDIGARH -160019 by post or personally by 20th November, 2017 up to 5 P.M. with entry fee of Rs. 10/- per participant.

Terms & Conditions of the Competition are as under :-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the Institution/School for eligibility in the Contest.
2. The participants should bring their own drawing material and cardboard. Only drawing sheets will be given by the Competition Organizers.
3. The judgment of the Chairman of the Competition will be final and binding on all.
4. The result of the Competition will be announced on the same day and prize winners will be honoured with cash awards and merit certificates on the same day.

Further enquiries may be made on Telephone Nos. 0172-2654932, 2641127, Email: jat_sabha@yahoo.com or personally from the Jat Sabha Office, at JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.- 160019.

करोडों की लागत से बनेगा कटरा में माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिये रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम यात्री निवास

आपको यह जानककर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ तथा रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम सभा जम्मू द्वारा आप सभी के सहयोग से गांव नौमई-कटरा, जम्मू में रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम की यादगार में पांच मंजिले यात्री निवास का निर्माण कार्य शुरू किया गया है।

यह विशाल भवन 1,20,000 वर्गफूट में बनाया जाएगा, जिसमें फैमिली सुइट सहित 300 कमरे होगें। करोड़ों रूपये की लागत से बनने वाले इस भवन में 5 मंजिल होगी जिन्हे 5 चरणो में पूरा किया जाएगा और यात्रियों की सुविधा हेतू भवन में 5 लिफट भी लगाई जायेगीं। यह भवन स्थल जम्मू से 35 किलोमीटर दूर मैन जम्मू-कटरा हाईवे तथा कटरा बस स्टैंड से 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस भवन निर्माण के लिए 10 कनाल जमीन खरीद ली गई है, जिस पर जमीन समतल करने तथा अस्थाई स्टोर व सिक्योरिटी गार्ड रूम का निर्माण कार्य चल रहा है। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कान्फैंस हाल, मैडीकल स्टोर, डिस्पैंसरी, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके बच्चों के लिए मुफत ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के विश्राम के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं।

यात्री निवास का भूमि पूजन 24 अक्तुबर 2018 को सम्पन्न करते हुए इस दिन यात्री स्थल पर भूमि पूजन की नेम प्लेट भी स्थापित की जा चुकी है। भवन की आधारशिला रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम की घोषित जन्म तिथि 10 फरवरी 2019 को बंसत पंचमी उत्सव के अवसर पर रखी जाएगी। इस कार्यक्रम में जम्मू काश्मीर के महामहिम तथा रहबरे आजमचौधरी छोटू राम के नाती केंद्रीय इस्पात मंत्री चौधरी वीरेंद्र सिंह को विशेष तौर से आमंत्रित किया गया। भवन में रहबरे आजम दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा भी स्थापित की जाएगी।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में 3 दिन तक मुफत ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इस भव्य भवन के लिए निर्माण सामग्री का भी योगदान दिया जा सकता है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

जाट सभा को दी जाने वाली अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला

सम्पादक मंडल

संरक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़
जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 **RNI No. CHABIL/2000/3469**

मुद्रक प्रकाशन एवं संरक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।